नीक दिनक बाइस्कोप



अशोक

नीक दिनक बाइस्कोप

अशोक



शेखर प्रकाशन
पटना

ISBN - 978-81-934584-6-4

नीक दिनक बाइस्कोप
(मैथिली व्यंग)

प्रथम संस्करण : दिसम्बर 2018
मूल्य : 50 टाका

प्रकाशक :
शेखर प्रकाशन
2A/39, इन्द्रपुरी
पटना-8000024
मो. : 09334102305

मुद्रक :
अक्षर प्रिंटिंग प्रेस,
दरियापुर, पटना-4

NEEK DINAK BIOSCOPE
COLLECTION OF MAITHILI SATIRE
Edition : Dec. 2018, Price - 50/- Only

रचना-क्रम

*

कहबाक अछि....

वर्ष 2014क मार्च मास रहय। एक दिन दैनिक हिन्दुस्तानक आफिस सँ अवधेश प्रीतजीक फोन आयल। अवधेश प्रीत हिन्दीक प्रसिद्ध कथाकार छथि। हुनका सँ परिचित रही। भेंट-घाँट छल। ओ कहलनि जे अखबार मे एकटा स्तम्भ छपै छै–ठांहि-पठांहि। मैथिली, भोजपुरी आ मगहीमे। अहाँ मैथिलीमे कालम लिखू। शरदिन्दु चौधरी आ विरेन्द्र नारायण झा सेहो लिखैत छथि। हम कहलियनि जे हमरा एहि तरहक लेखन के कोनो अनुभव नहि अछि। हमरा सँ कोना हैत? ओ ओहि स्तम्भक सम्बन्ध मे अखबारक उद्देश्य के स्पष्ट केलनि। इहो कहलनि जे ओ पन्ना जाहि पर ठांहि-पठांहि छपै छै, से मैथिली भाषी क्षेत्रमे सेहो पठाओल जाइ छै। हम तखन अखबारक आफिसमे जा क' हुनका सँ भेंट केलहुँ। गप-सप भेल। हुनके कक्षमे बैसल सुनील झा सँ सेहो परिचय भेल। ओ बहुत आप्त लोक निकलला। ओहो उत्साहित केलनि। तँ एहि प्रकारें हम दैनिक हिन्दुस्तानक स्तम्भ ठाँहि-पठांहिमे व्यंग लिख' लगलहुँ। कोनो मास एक बेर त' कोनो मास दू बेर लिख' पड़य। कखनो के अबूहो लागय। फुड़ेबे ने करय जे की लिखबै। व्यंग लिखब असान गप नहि छै। तै पर ठांहि-पठांहि। महाग मुश्किल। मुदा अवधेश प्रीत जी पढ़ि क' प्रशंसा करथि। हुनका द्वारा देल उत्साह सँ हम लिखैत गेलहुँ। ओ बादमे कहलनि जे पचास टा पूरि जाय त' पोथिओ छपा सकैत छी। हमहूँ से मनसूबा पोस' लगलहुँ। मुदा अवधेशजी जखन सेवानिवृत्त भ' गेला त' ई स्तम्भ अनियमित भ' गेल। अखबारो प्रबन्धन के जेना एहि मे रूचि नहि रहलै। क्रमशः स्तम्भ बन्द भ' गेलै त' लिखबो बन्द भ' गेल। पचास टा नहि पुरि सकल। तकर अफसोस रहल। तैयो एकतीस टा लिखलहुँ आ विभिन्न तिथि के से छपल। एहि पोथी मे से एकतीसो रचना प्रकाशन तिथि के संग देल जा रहल अछि।

आइ जखन पोथीक प्रकाशनक समयमे फेर सँ एक बेर अपने पढ़लहुँ अछि त' लगैए जे बेसी काल व्यंग सुतरल अछि नहि। तखन किछु

बात-विचार साझी करबाक कोशिश अवश्य केलहुँ अछि। अपन लोक सभ संग संवाद भेल अछि। एहि तरहक लेखनक अनुभवक संग एकटा बात अवश्य भेल जे अखबारक कारणे चर्चित भेलहुँ। जे सभ हमर कोनो पोथी नहि पढ़ने रहथि सेहो एकरा पढ़लनि। कतेक लोक फोन क' कए प्रशंसो कहियो क' करथि। सेवा जीवनक त' कतेको सहकर्मी हमर लेखन सँ एही माध्यमे परिचित भेला। किछु गोटे इहो कहथि जे कठिन मैथिली रहैत अछि तैं पूरा-पूरी बूझि नहि पबैत छी। जे, से, एहि लेखन सँ परिचय क्षेत्रक विस्तार अवश्य भेल। किछु बात पर, किछु सामयिक घटना-समाचार पर सोचबा- विचारबाक अवसर भेटल। संगहि ईहो महत्वपूर्ण रहल जे अपन स्वभावक विपरीत कने-मने ठांहि-पठांहि कहबाक-बजबाक सेहो अवगति भेल। हिम्मति भेल।

अखबार मे पढ़ब आ पोथी मे सभ के एकठाम पढ़ब दूनू दू भिन्न वस्तु थिक। ई लेखन 13 मार्च 2014 सँ 4 मई 2016 धरिक अछि। वर्ष 2014 आ वर्ष 2015क बेसी आ 2016क केवल पाँच टा। ओहि विशेष कालावधिक छाप त' एहि मे अछिए संगहि काल के भेद क' कतेको बात-विचार समय बितलाक बादो अपन स्थान पर एखनो कायम अछि। जे अछि, से आब पुन: पोथीक रूप मे अहाँलोकनिक समक्ष अछि। हमर कथेतर गद्यक नव विधामे नव पोथी। एहि पोथी लेल हम दैनिक हिन्दुस्तान अखबार आ विशेष क' प्रिय कथाकार मित्र अवधेश प्रीत जीक आभारी छी। शरदिन्दु जी उत्साहित क' एकरा पोथीक रूप देलनि ताहि लेल हुनका विशेष धन्यवाद ।

पटना, 9/11/2018 **अशोक**

चुनावक फगुआ

औ बाबू फगुआ आ चुनावक गठबंधन देखि क' त' मन गारडेन-गारडेन भेल अछि। फगुआ त' ओहिना उमकी के पाबनि तइ पर चुनावक चुमकी। एहना मे वृंदावनक लट्ठमार होलीक संग दिल्लीक कनपटीमार होली कोना नहि हो। मोछवला सहाराश्रीक कनपटी आ गाल कारी मोसि सँ पोता गेल। आप प्रवक्ता योगेन्द्र यादवक चितकबरी दाढ़ी पर नील मोसि अपन रंग जमौलक। बाबू, ई क्रम त' एखन शुरुहे भेल अछि। देखी आगू ककरा ई सौभाग्य प्राप्त होइत छनि। एखन त' खाली टिकटेक पुड़िया बँटायल अछि। तइपर ई ताल अछि। कक्का-भतिजी चलि रहल अछि। नामांकनक अबीर उड़त तखन की हैत! की इमोशनल अत्याचार घरे-घरे हैत! फगुआक रंग आ चुनावक ताल केहेन रंगताल देखाओत से के कहय।

एहन गठबंधनो नहि देखलए। जकरा भरि जनम गारि पढ़लहुँ। पानि पी पी क' कोसलहुँ तकरा संग गेठमिलानी मे मिसियो संकोच नहि। जे काल्हि धरि रावण छल। जकरा अहंकारी, दुराचारी, अत्याचारी कहलहुँ से भरिए राति में राम सन मर्यादा पुरुषोत्तम भ' गेल। राता-राती एहन हृदय-परिवर्तन हमरे सभक नेता के भ' सकैत अछि। एहन हृदय आ एहेन परिवर्तन! वाह, की बात अछि। लठबंधन एकरा नहि कही त' ककरा कही। वाह रज्जा! की शब्द बनौलह। कह' केहेन मन लगै छह! देवाल परहक गिरगिट सभ नांगरि सुटका क' पड़ायल जा रहलह अछि। माझ फगुआ आ तइ मे गिरगिट सभक रंग बदलब। बजार जेबाक कोन काज। जे रंग मोन हो, नेता सभ सँ ल' लिअ'।

मोन होइत अछि हाथ मे झाड़ू उठा ली। सभटा गिरगिट के बहारि क' फेकि दी। मुदा झाड़ूओ त' बजार मे महग भ' गेल अछि। सभटा झाड़ू आप पार्टी बला सभ कीनि क' जमा क' लेलक अछि । सुनै छी एकहि बेर सभ लुंगी डाँस करैत गली-कूची के साफ कर' लागत। आइटम सौंग गाब' लागत । होइये मुन्नी के ने बदनाम क' कय छोड़ि दिअय ई सभ।

ओ बाबू एहि चुनावी फगुआ मे त' झुनकुट बूढ़ो सभ छह दाँत भ' गेल अछि। उमक' लागलए। ताहू मे बनारसी फगुआक त' एखने सँ रंग चढ़ल अछि। सुआइत भरि फागुन बुढ़बा दियर लगै छै। एहि बेर काशीमे जे फगुआ हैत से दुनिया देखत। जे काशीक फगुआ देखने अछि सैह बूझि सकैए ओकर महिमा। एहि बेर त' निज फगुआ दिन गली सभक मुहथड़ि पर जे फूल-माला-अक्षत सँ पूजित रहैत छथि सैह लोकक सहाय हेथिन। एहि बेर सेहो सेठजी लोक के अनचोके मे रंग-अबीर लगा क' विखिन्न-विखिन्न गारिक मजा लेता। हँसता, ठहक्का लगौता। फेर गारि पढ़ै बला के चारू टूक नब अंगा-बस्तर पहिरा क' चमचम खुऔता। गारि सुनबाक एहन विन्यासी कत' पाबी। हम त' अपनो नेता के कहैत छियनि जे अनेरे खिसियाउ जुनि। मोन के कने फगुआउ। राति के सट्टासट्टी आ दिन के हट्टाहट्टी कहै बला के चारू टूक अंगा-बस्तर दिअनु। मधुबनीक नङरेठ खुअबियनु ।

एहि चुनावी फगुआ मे जे नहि खेलक नङरेठ से जनमे किए लेलक। एहि नङरेठ के खेबाक लेल गारि पढ़ब आ गारि सुनब जरूरी। गारि पढ़ब आ गारि सुनब एक महान कला थिक। एहि कला के सीखब जरूरी। त' चलू आइये सँ कोनो एकटा गारि के बारे मे सोचब शुरू करू। मुदा औ बाबू से सलमान खुर्शीदक गारि नहि हुअय । कम सँ कम फगुआ भरि ओहि गारि पर विचार नहि हो।

13 मार्च 2014

*

ई ककर बजार छियै हो भाइ !

औ बाबू आब त' देश मे कोनो पर्व हो, बजार लगबे करत। फगुआ हो कि दिवाली। ईद हो कि बकरीद। क्रिसमस हो कि अक्षय तृतीया सभ मे चारूकात बजार सजि-धजि कें तैयार। की मार्केटिंग के जमाना अछि बाबू! मोनमे पैसि कें जेबी काटि लैत अछि । फगुआमे पिचकारीक बदला बंदूक तानि दैत अछि। आब छोड़ू बंदूक सँ रंग। एके 47 सँ जे लाल रंग निकलै छै से केहेन सोहनगर होइ छै। ईह, बेटाक मोन संजय दत्त भ' जाइ छै। दिवालीमे जे लक्ष्मी-गणेशक मूर्ति भेटै छै से केहेन सोन सन लगै छै। होइ छै जे एहि सोनाक भगवान के पूजा करिते रही। अक्षय तृतीयामे जे नव कनियां तनिष्कक ब्रांडेड गहना कीनै छथि से पति लग विद्या बालन जकाँ डोलै छथि। धनतेरसमे त एक्के दिनमे अगबे पटनामे सय करोड़ सँ बेसीके मोटर बुक भ' जाइये। जय हो! एहि बजारक विजय हो!

औ बाबू, बरख दिनक पाबनिक जँ एहेन विजयी बजार हो त पंचबरखा महापर्वक विश्वविजयी बजार कोना नहि हो। ताहू मे लोकतंत्रक महापर्व। एहि महापर्व मे सुनै छी ई बजार तीस हजार करोड़क मार्केटिंग करत। एक-एक टा प्रोडक्टक प्रोडक्सन कॉस्ट दू करोड़ सँ पांच करोड़क अछि। ताहि पर सँ प्रोडक्टक विज्ञापन मे फी प्रोडक्ट करोड़-दू करोड़ खर्च। एना मे चैतक बिरों मे त' ई बजार बूझू गर्दा-गर्दा क' देत। ईह एहेन चकचोन्ही बला बजार तँ कियो आइ धरि देखनहि नहि छल। कतहु से कोनो मुरूत ल' लिअ'। ओकरा धो-पोछि कें बजार मे उतारि दिअ'। अपन ब्रांड कें मोटका चमचमाइत ठप्पा लगा क' बजार मे उतारि दिअ'। एहि बजार मे किसिम-किसिम के मुरुत बिकयबा पर बित्त अछि। हमरा कीनू तँ हमरा कीनू। हमरा कीनब तँ अहाँक जिनगी हरियर भ' जायत। हमरा अपनायब तँ मोनक कमल फुला जायत। एम्हर सँ एक गोटा बाँहि पकड़ैत अछि तँ ओम्हर सँ कियो दोसर हाथ धरैये। एम्हर सँ कियो कहै छथि जे एहि मुरुत के नहि ल' जाउ, ई तँ साम्प्रदायिक ब्रांड के मुरुत छी। ओम्हर सँ किओ पोल्हा रहल

जे सेकुलर ब्रांड के पुतरी सँ घर के सजाउ। बीच मे सँ कियो निकलि क' भ्रष्टाचार ब्रान्डक खेलौना बेच' लगैत अछि। लिअ' खेलाउ एहि बेबी डॉल सँ। कात मे कियो ठाढ़ भ' क' महंगाइ ब्रांड कुंग फू बेचि रहल अछि। एहि बजार मे बड़का-बड़का माल खुजि गेल अछि। ओहि मे रंग-बिरंगक सपना बिका रहल अछि। सपनाक सौदागर सभ एक सँ एक सपना दिने मे देखा रहल अछि। अबै जाइ जाउ! अबै जाइ जाउ! सुन्दर-सुन्दर सपना देखू। एहि सपना सभ के ल' क' ड्रीम गर्ल उतरल छथि। सपना सन के डिम्पल गर्ल चिरौरी करैत छथि। एक सँ एक सेलिब्रिटी अपन-अपन ब्रान्डक सपना बेचि रहल छथि। ल' जाउ एहि मुरुत के, ई अहांक सपना साकार करत। एहि बजारमे ठाढ़ हम पुछै छियै सौदागर सभ के । के छियह तोँ हौ? कत' सँ अयलह अछि? कोन गाम घर छह? कोन देस के लोक तोँ सभ छह हौ बाप। तू त' धन्ना सेठ सभ छह हौ। तू करोड़पति, हम खाकपति। हमर-तोहर कोन संबंध ? मुदा ई सभ किछु बजै नहि अछि। खाली जोर-जोर सँ हंसैत अछि। ई ककर बाजार छियै हो भाइ! ई कोन देश छियै हो भाइ!

3 अप्रील 2014

*

फेर वेतलबा डारि पर

औ बाबू ई कोन अगियावेताल राजनीति देखि रहल छी। जेहने अगियाह मौसम तेहने अगिलेसू राजनीति। पहिने जखन फागुन मास छल त' हवामे मादकता रहय। तखन मद मे चूर हमर नेता लोकनि गारा-गरौअलि शुरू केलनि। एक-दोसरा के विखिन्न-विखिन्न गारि पढ़' लगला। कतेक गरिखर नेता ओहि मौसम मे उठि बैसला। नेता सभ के एना गारा-गारी करैत देखि लोको सभ जूता-चप्पल फेक' लागल। कतेक के मुँह-कानमे कारी आ नील रंग पोतल गेल। जखन चैत चढ़ल त' चाटी चलब शुरू भेल। ले चाटी। दे चमेटा। मुदा चैतक धुक्कड़ मे ई नेता सभ कथी ले मानत। अगिलकण्ठ नेता सभ आब अगिनवान चलब' लागल अछि। घरे-घरे आगि लगेबा पर बिर्त्त भेल अछि। इमोशनल अत्याचार सँ मोन नहि भरलै त' किरासन तेल ढारि क' दियासलाइ खड़र' लागल अछि।

देखू त' कियो खण्ड-खण्ड कटबा लेल कहि रहल अछि। कियो टुकड़ी-टुकड़ी करै लेल कहैत अछि। कियो अगिलह, गौरवशाली भारतीय सेना के हिन्दू-मुसलमान मे बाँटि रहल अछि। कियो अगिलगाओन बदला लेबाक लेल उकसा रहल छथि त' कियो पहलवान निर्मम बलात्कारी सभक प्रति मोलायम हेबाक लेल कहि रहला अछि। तै पर सँ देखू त' ताल। बड़का-बड़का नेताक हाथमे पिजायल तरुआरि चमकि रहल अछि। समर्थक सभ नेतामहराजक हाथ मे छोट-छोट खंजर सँ सजल-धजल ढाल उपहारस्वरूप भेंट द' रहल छथि। लिअ' भोंकू आ काटू। ओध-बाध क' दिअ' दुश्मन के। खुजल तरुआरि हाथ मे ल' गौरवसँ इतराइत नेताजी मुसकुराइत फोटो खिंचा रहल छथि। नाङट तरुआरिक संग नेताजीक कलरफुल फोटो अखबार मे छपि रहल अछि। औ बाबू ई की छियै? चुनाओ छियै कि महाभारत?

लगैए इतिहासक सभटा भूत-पिशाच एहि चुनाओमे उतरि आयल अछि। इतिहासक लहास के कान्ह पर लदने आब घुमल घुरु। गीजैत-मथैत रहू लहास सभ के। शवासन पर बैसि क' वर्तमान के स्वाहा करैत रहू। एना

मे वर्तमान जित्ता-जिनगीक समस्या सभ नाङरि सुटकन्त खरही भेल रहत। ओहिना मन्हुआयल कात-करौट मे मुंह बौने हाफी पर हाफी लैत रहत। नेताजी सभ चुटकी पर चुटकी बजबैत रहता। तोर मैया जीव मोर मैया जीव करैत रहता। फेर सत्ता पाबि क' अड़ना महींस जकाँ सिंहासन पर पसरि जेता। जखन निन्न टुटतनि त' कतहु मुजफ्फरनगर भ' जायत। कतहु भागलपुर भ' जायत। कतहु गुजरात भ' जायत। कोनो ठाम बेलछी होयत त' कोनो ठाम लक्ष्मणपुर बाथे। नेताजी सभ कपारमे रंग-बिरंगक लत्ता लपेटने अगिलह जकाँ त्रिशूल भजैत रहता। लाठी मे तेल पियबैत रहता। राशि-राशि के पाग, पगड़ी, मुरेठा आ टोपी पहीरि क' गौरवे आन्हर होइत रहता। लोक के भरमबैत रहता।

औ बाबू ई नहि लगैये जे ई अगियावेताल राजनीति देश के सुड्डाह क' कय छोड़त? ई अगिया घाओ चुनावक बादो टीसत-डाहत? बाँट-बखरा करैत रहत? स्नेह-सौहार्द-भैयारी-बहिनापा के सूली पर लटकौने रहत? जँ लगैये त' एहि नेता सभक चानि पर पानि के ढारत? के माय-पितियाइन औती एकरा सभ के जुड़बै लेल? हे कोटि-कोटि भारत माता! के बोले तुमि अबले? एहि अगियावेताल राजनीति पर भरि चुरुक शीतल जल ढारु हे माता। ई वेतलबा फेर सँ डारि पर आबि के बैसि गेल अछि। हे भाय-बहीनि आब कतेक दिन विक्रमादित्यक प्रतीक्षा करैत रहब। दिऔ भोट पर चोट।

24 अप्रील 2014

*

नीक दिनक बाइस्कोप

नीक दिन अबै बला अछि। औ बाबू लगैये जेना बड़का हिट फिलिम आबि रहल अछि। एहि फिलिमक प्रचार तेहन जोर-शोर सँ भेल अछि जे सय करोड़ी फिलिम सभक सेहो कोंढ़ काँप' लगलैक अछि। एकर आगू सभ फिलिम पानि भर' लागत। जकरा देखू नीक दिनक गप क' रहल अछि। कतेक त' एहि बातसँ एकदम आश्वस्त भ' गेल छथि जे ई फिलिम सभक छुट्टी क' देत। से कोनो फुसियो गप नहि लगैये। जहियेसँ एग्जिट पोलक पोस्टर लागल तहिये सँ सेंसेक्स धिया-पूता जकाँ उछल' लागल। कतेको कम्पनीक शेयरक भाव बढ़ि गेल। जाहि अडानीक एतेक दुर्गंजन भेल हुनको कम्पनीक शेयरक भाव नाच' कूद' लागल ।

ओहि कम्पनी सभ मे निवेश केनिहार लोकक मोन मे लड्डू फुट' लागल। सभ के होइ छै जे आब त' पजबहि पैर अछि। एहि सँ नीक दिन आब की आओत? जतबा पाइ-कौड़ी लगौलहुँ से दस-बीस गुना बढ़ि क' आपस आबि जायत। आब एहि मुनाफा के रोक के? ककरा सामर्थ छै? सभ मोने-मोन गुड़-चाउर खा रहल अछि। मुसकुरा रहल अछि। हँसि रहल अछि। भावना मे तर-ऊपर भ' रहल अछि। एहन दिन भगवान कहियो-कहियो दैत छथिन। ककरो-ककरो दैत छथिन। एहना मे दस बरख पहिने जिनका फील गुड नहि भ' सकलनि सेहो नीक दिन अयबाक सपनामे मातल बेसोह छथि। अबै बला हिट फिलिमक गुणगान क' रहल छथि। की धांसू डायलाग छै हौ भाइ! की जादू भरल एक्टिंग छै हौ बाप।

असलमे बाबू भविष्य त' भविष्ये थिक। आशाक जोग सँ भविष्यक कल्पना गुदगुदी लगबैते छैक। ताहि मे वर्तमानक निराशा त' कल्पनाक रंग के आर गाढ़ करैये । तेँ भविष्यक नीक दिन वर्तमानक खराब दिन पर खूब फुह खेलाइये। नीक दिनक एही आशा-आकांक्षामे लोकक मोनमे कमलक फूल भकरार भ' क' फुला गेल। तमाम जोड़-तोड़ आ गणित फेल भ' गेल। भविष्यक जादू भाइ, एहने होइ छै। वर्तमानक बैड फीलिंग के फील गुड मे

बदलि दैत छै। मुदा भविष्य के देखलक अछि के? अज्ञात त' सोहाओन होइते छैक। मुदा औ बाबू जे किछु हो, महो-महो समय मे ई फिलिम किछु दिन आर त' खेपाइये देत।

देखि-देखि क' मोन टंच भेल रहत। सोहाओन इजोरियाक हुलास आलू-परोरक दाम के कतियौने रहत। अकास ठेकल महंगाइ मे जेबी कटबाक टीस एहि नीक दिनक फिलिम देखि क' भुलायल-बिसरायल रहत। रोजी-रोटीक उदासी वसंतक पतझड़ सन नव पल्लवक आशामे जेठक दुपहरिया सन समय काटिये लेत। हमरो सभक आशावाद, की बात छै बाबू, एहिना समय जँ कटैत चल गेल त' हर्जे कोन? समय के त' कहुना कटबाके छैक। एहि मे गुडे-गुडे फील करी त' कोन बेजाय बात। देखिअनु अपन नेता के, बैड फीलिंग सँ बचबाक लेल कोना बड़का डेरा सँ छोटका डेरा मे चल गेला। आब ओहिठाम ओहो नीक दिनक फिलिम के मजा लेता।

त' बाबू एहि अबै बला नीक दिनक फिलिम देखबा लेल हमहूँ सभ ओरिआन क' कय बैसी। अबै जाइ जाउ। अबै जाइ जाउ। बुदुर, इदरीस, रामखेलावन सभ अबै जाइ जाउ। नीक दिनक बाइस्कोप शुरू हुअ' बला अछि। एकदम हिट फिलिम छैक। एक सँ एक अभिनेता जिनकर नीक दिन शुरू भ' गेल छनि से पर्दा पर अभिनय क' रहल छथि। जिनकर सभक नीक दिन अबै बला छनि से सभ पर्दाक कात मे गुलगुल क' रहल छथि। हँसैत-खिलखिलाइत पात्र सभ स्टेजक चारूकात डिस्को डांस क' रहल छथि । देखू, जादूगर बाँसुरी बजबैत एहि कात सँ ओहि कात जा रहल अछि । ओकर पाछू ई कथी के धर्रोहि लागल अछि? ई के सभ छी? नहि चिन्हैत छियै त' चीन्हि लिऔ। एहन बाइस्कोप आइ धरि नहि देखने हैब...। आउ, अबै जाइ जाउ।

22 मई 2014

*

आब' हे अखाढ़ !

औ बाबू एहि बेर जेठ चढ़ल त' जेना मौसमे बदलि गेल। तमाम गरमी घाम बनि क' टघरि गेल। लागल जेना एक्कहि बेर यवनिकाक पतन भेल हो आ विशाल रेशमी पर्दा नहूँ-नहूँ ऊपर उठि रहल हो। लागल जेना नगाड़ाक चोट आ तासाक गड़गड़ी झप-झपाक सन ठहरि गेल हो। अकस्मात बजैत धुतहू कनियाँ मायक करेज के दलकायब बन्द क' देलक। लागल जेना भोरहरबा मे रसनचौकी बाजि रहल अछि। तकरबाद जे मधुर-मधुर मंद-मंद हवाक सिहकी चलल त' मोन शीतल-शीतल भ' गेल। ई ओ दिन छल जहिया नब सरकार आबि गेल रहय। शपथ खा रहल छलय। एकटा अद्‌भुत उन्माद आ उमंग सौंसे धरती पर व्याप्त भ' गेल रहय। लगै छल जेना सत्ते नहि, सभ किछु बदलि गेल अछि। देश बदलि रहल अछि। राजनीति बदलि रहल अछि। नेता-अभिनेता सभ बदलि रहल छथि। फागुन-चैत-वैशाखक गारागारी, कटाउझ, हल्ला-गुल्ला, रेड़म-बहेड़मक बाद जेठक विकट दुफरिया मे नीरव शांति पसरि गेल हो। जङला सँ सौंसे संसार अद्‌भुत शांतिमय लागि रहल छल। आह, जेठक दुफरियाक शान्तियो की गजब के शान्ति होइ छै!

एहि दुफरिया मे जे नेता सभ पहिने मुँह सँ बल्लम-बर्छा फेकि रहल छला से सभ अपन ठोर पर मधुक दुलेब द' क' मौन भेल पड़ल छथि। जिनकर सभक ठोर कने अलगलो छनि से सभ अवाक भेल निःशब्द छथि। अद्‌भुत रूपेँ ई निःशब्दता दूनू पक्ष मे देखाइ दैत अछि। एक पक्ष केँ जँ सुखमे शब्द हेरायल छनि त' दोसर पक्ष के दुखमे शब्द बिलायल छनि। औ बाबू ई पहिल बेर भेल जे चुनाव परिणाम खेल भावना के विलुप्त क' देलक। खेल त' खेल थिक। एहि मे जीत-हारि त' लगले रहैत छैक। जे टीम ठीक सँ खेलायत से जीतत। जेकरा ठीक सँ खेलायल नहि हेतै से हारत। जीत-हारि त' एहिना होइते रहैत छै। ई राजनीतियो की जीवन सँ अलग कोनो वस्तु होइ छै? मुदा नहि। एहि बेर जीत-हारि जेना बहुत गहींर धरि धँसि गेल

अछि दूनू पक्ष मे। तैं लगैये जे एक-दोसराक चीरहरणक बाद एहेन बाक्हरण भ' गेल अछि दूनू पक्ष के।

जे नेता सभ धुआंधार, धुरझार शब्दक अम्बार लगा देलनि से एकदमे मौन मे चल गेला। जे हरदम चहकैत, बहकैत रहैत छला से जेना ठकमूड़ी लागल हाँ, हूँ क' रहल छथि। बड़का-बड़का बयानवीर सभक मुँह सँ शब्दे नहि निकलि रहल छनि। कियो-कियो जँ कने-मने बजितो छथि त' बाज' किछु चाहैत छथि आ बजा किछु जाइ छनि। एहना मे ऊपर सँ एहेन धोपटान लगै छनि जे सटक सीताराम भ' जाइत छथि। जखन सभ एना मौनी बाबा भ' जेतै हौ बाप, सभटा नीके-नीक काजक गप देखा क' त' एकर सभक टी.आर.पी. पतनुकाने ल' लेतै। बिना अदगोइ-बदगोइक त' एकर सभक बजारे उसरि जेतै। खाली फल्लां नेताक कुर्त्ता-बंडी, ड्रेस डिजाइनक गप पर कतेक दिन खेपि सकैये? दस-सूत्री, बीस सूत्री गपक फोड़न सँ कतेक दिन राहड़िक दालि छौंकैत रहत? एहि बजारो के त' हरदम बदलैत रह' पड़ैत छै। ई बजार त' दीर्घ सूत्री सभक बजार नहि भ' सकैत अछि। एहना मे बाजब-भुकब आ चून-तमाकुल बन्न भेने त' बिया-बालि ओहिना पड़ले रहि जेतै। केना हैते खेती? कोना हेतै रोपनी?

ई पुरबा-पछबा दूनू कतेक दिन दम सधने रहत? ई सृष्टि कतेक दिन निःस्तब्ध भेल रहत? कहिया गरजत इन्द्रक हाथी? कहिया गिरहथ सभ नचारी छोड़ि क' मलार गौताह? हौ यात्री बाबा तोरे कविता त' कहै छियह। कहिया प्रमुदित हैत दूबिक सीर-सीर? कहिया कुशक पेंपी पुलकित हैत? कहिया माटिक बगय बदलत? आब' हे अखाढ़? आबहु त' आब' ।

12 जून 2014

*

बिलाइत गाम

औ बाबू जँ फुर्सति हुअय त' चलू कने गाम के ताकल जाय। गाम अछि की गायब भ' गेल। निट्ठाहे गायब भ' गेल कि किछुओ बचल अछि। ओकर भौतिक उपस्थिति आब एहि संसार मे अछि की नहि? आ कि बचल अछि त' खाली ठट्ठर टा बचल अछि। खाली नाम टा रहि गेल अछि की? जखन गामक पता पर चिट्ठी-पत्री नहि पहुंचि सकैये त' नामे रहने की? ओकर की प्रयोजन? एहि बातक कोन प्रयोजन जे ओ गाम ककरो सासुर छल। ककरो नैहरो छल। ओ गाम आब कतहु नहि अछि। छहर आ बाँध ओकरा गीड़ि लेलक। डैम ओकर अस्तित्व लोप क' देलक। ओ गाम आब एकटा इतिहास अछि। अहाँ वा कियो इहो कहि सकैत छी जे हे भाइ गाम त' एखन अछिए, ओ इतिहास नहि बनल अछि। त' हम कहब जे चलूँ ताकल जाय जे गाममे की सभ बाँचल अछि। की ओ विशाल बड़क गाछ, कि घनगर पीपड़क गाछ आ कि ओ झोटहा पाकड़ि कतहु देखाइत अछि जे गामक चेन्ह रहय। कत' गायब भऽ गेल ओ सभ चिन्हास? सौंसे गाम घुमि जाउ। कय टा बड़द भेटल? ओ बछौड़ ब्रान्ड बड़द आब खाली पशुपालन विभागक साइन बोर्डे टा मे भेटत। कतेक गाय-महीस अछि गाममे? कतेक घैल दूध होइये रोजाना? गामक पोखरि सभ की भेल? कय टा पोखरि गायब भेल अछि? कय टा पोखरि मरणासन्न भेल हुकुर-हुकुर क' रहल अछि? हौ भाइजी, ई पग-पग पोखरि सेहो इतिहास बनि रहल अछि। सड़कक कात मे साइन बोर्ड एहिना टंगले रहि जायत। साइन बोर्डक बगल मे एकटा नब शहर बसि जायत। सरकार के एक सय नब शहर बसेबाक छै। एहि लेल हजार-लाख एकड़ उपजाऊ खेत सीमेंट-कंक्रीटक भोजन बनत। पानिक परम्परागत स्रोत फाँसी पड़ि जायत। हरियाली आ नैसर्गिकताक लतखुर्दनि होयत। गामक आम, लीची, कटहर, जामुन, हौरुसा, दाड़िम सभ बिला जायत। केराक पात लेल बेलल्ला भेल रहब। तखन कोना औंठा देखा लोक के कहबै, हे लिअ कटहर! तँ भाइ, गाममे गाय ताकू, बड़द ताकू, महीस

ताकू। चीड़ै-चुनमुनी ताकू। खेत-पथार ताकू। गाछ-विरीछ ताकू। कुम्हर, खम्हाउर, ओल ताकू। पोरोक साग ताकू। की सभ भेटल आ की सभ गायब भ' गेल!

औ बाबू एम्हर त कुकुरो निपत्ता भ' रहल अछि। बेचारा फोर लेन के गामक सड़क बुझ' लगैत अछि। सय कि.मी. कें गतिमे एहन दुर्गति नहि देखलए। एहि रफ्तार मे कोना सकत साइकिल, एक्का, रिक्शा, बैलगाड़ी। सभ बिला गेल। बिलाइत जाइत अछि। भेटि रहल अछि पेट्रोल, डीजल, मोबिल। ओकर गन्ध। बदलि रहल अछि गामक भूगोल आ जलवायु। आबि रहल अछि नब रोग आ व्याधि। लिज्जत पापड़ खुर्रम...खुर्रम...। अंकल चिप्स। ठंडा मतलब कोकाकोला। मैगी, मोमो, पैटीज, बर्गर आबि रहल अछि। जँ बाबू, गामक दोकानमे गामक कोनो वस्तु नहि बिकाइत अछि त गाम बचल अछि की उजड़ि रहल अछि? कने अपन थाड़ी दिस सेहो ताकि लिअ। कय टा वस्तु गामक अछि ओहि मे?

अच्छा त' अहाँ ईहो कहि सकैत छी जे हमरा कोन खगता बेगरता अछि गाम के तकबाक? बिलाइत अछि त' बिला जाओ। हम त' भने पटना मे छी। दिल्ली, मुम्बई, लंदन, न्यूयार्क मे छी। कतहु नहि छी त' सरकार जे बनाओत शहर, ताहि मे रहि लेब मुदा हे भाइजी, अहाँ सन कत्ते गोटा अछि जे शहर मे प्लॉट वा मकान कीनि सकत? मानलहुँ जे सरकार अहीं सभक अछि। मुदा जे मनुक्ख अपन लोक परम्परा, मान्यता आ मानवीय संवेदनाक संग हीलि-मीलि क जीब' चाहैये से अपन गाम के त' तकबे करत। तकबे करत जीवन आ जीबाक साधन। ओ साधन जे भूगोल आ जलवायु ओकरा देलकै अछि । त' किए नहि कहबै जे शहरक बदला गामे के बसा दिअ'। एना बसा दिअ' जे काज-रोजगारो भेटय आ अपन समाज-परिवारक संग रहियो सकी। अएँ, किए नहि कहबै?

03 जुलाई 2014

*

कब्जाक इलम

अच्छा भाइ साहेब, अहाँ कोनो जोकरक लोक छी की नहि? जँ छी त' कहू जे कोन चीज पर अहाँके कब्जा अछि? कोनो चीज पर कब्जा अछि की नहि? जँ अहाँके कोनो चीजपर कब्जा नहि अछि त' अहाँ कोनो जोकरक लोक कोना छी? आइ-काल्हि त' जकरा जत्ते पैघ वस्तु पर कब्जा छैक से तते पैघ लोक कहबैए। पैघ लोके टा नहि कहबैए, देवता सेहो भ' जाइये। कब्जा सँ लोक मे देवत्व आबि जाइ छै। जखन देवत्व आबि जाइत छै तखन घरे मे नहि बाहरो मे कब्जा कर' लगैत अछि। गाम पर कब्जा करैत अछि। शहर पर कब्जा करैत अछि। पंचायत पर कब्जा करैत अछि। कोनो निगम निकाय पर कब्जा करैत अछि। कोनो सामाजिक, सांस्कृतिक आ सहकारी संस्था पर कब्जा करैत अछि। प्रांत आ देश पर त' कब्जा करिते अछि। ओहेन सभ वस्तु पर कब्जा करैत अछि जत' लोकतंत्र ओकरा अवसर दैत छै। हे भाइ ई वैह लोकतंत्र छी जे अपन देशमे सभ सँ पैघ वस्तु मानल जाइत अछि। ई वैह चीज छी जाहि पर पूरा देश छाती फुला क' ढेकरैत रहैत अछि। ई वैह लोकतंत्र छी जे हमरा सभक गरिमा एखनो कायम रखने अछि।

अहाँ कहब जे नै हो भाइ, एहन बात नहि छै। हमहूँ कोनो जोकरक लोक छी। हमहूँ बूझै छियै जे लोक सभ तंत्र पर कब्जा कोना करैत अछि। मुदा की करु हमरा ओ इलमे ने अबैए। त' हम कहब जे नहि भाइ साहेब, ओ इलम अहाँ सीखैए नहि चाहैत छी। जँ सीख' चाहितहुँ त' एतेक दिन मे आबि गेल रहितय। सड़सठि बरख कोनो कम समय नहि होइ छै। एते दिन मे त' कब्जाक राशि-राशि के इलम निकलल। फेर हरेक इलम कत्ते बेर ने बदलल। आब त' एकदम हाइटेक भ' गेल अछि। जेना दिन-दिन टेकनलाजी बदलल जा रहल अछि तहिना कब्जाक इलमो बदलि रहल अछि। आब त' एहन इलम आबि गेल अछि जे अहाँक आँखिक काजर निपत्ता भ' जायत आ अहाँ बुझबो नहि करबै। बादमे अपना के भरोस दैत रहब जे चलू दूनू आँखि त' अछिए। ई कोन कम बात छी। काजरे टा ने चौरौलक। असलमे

भाइ, बात अहीठाम फँसल अछि। ई केवल काजरेक निपत्ता हेबाक गप नहि थिक । आँखि पर कब्जाक सेहो बात छी। आइ काजर पर कब्जा केलक काल्हि आँखियो पर कब्जा करत। असल पूछी त' पहिने आँखिए पर कब्जा क' कय तखन काजर पर कब्जा केलक अछि। मुदा अहाँ अपन आँखि नहि देखि क' खाली काजरे देखि रहल छी। त' पहिल इलम त' यैह भेल जे एना क' कब्जा करी जे लोक बुझबे ने करय जे कब्जा भेल। अहाँ आँखि पर कब्जा क' आँखिक काजर निकालि लेलहुँ आ आँखि वला अहाँक जयजयकार क' रहल अछि। अभिनन्दनक पत्र पढ़ि रहल अछि।

भाइजी, ई त' भेल पहिल इलम। जाहि इलम सँ अहाँ कोनो वस्तु पर कब्जा करब। तकरबाद होइ छै कब्जा लगातार कायब राखब। एहि लेल ओहि वस्तु के अपना हिसाब सँ एना बदल' पड़त जे ओ वस्तु केवल अहींटाक मुँह ताकय। अहाँ कहियैक, बैस त' बैसय। लघी करबाक होइ त' कहय, पाँच मिनट मास्साहेब। नदी दिस जेबाक होइ त' कहय, दस मिनट मास्साहेब। एहि दोसर इलमक सभ सँ पैघ गुन ई होइ छै जे एहन इलमदार लोक अपना छोड़ि ककरो दोसर पर विश्वास नहि करैत अछि। मुदा ओकर दोसर, तेसर, चारिम लोक ई सभ बात बुझियो क' केवल ओकरा पर विश्वास करैत अछि। ओकरे भजन गबैत अछि। ओकरे कीर्तन करैत अछि। ओकरे अपन एकमात्र देवता मानैत अछि।

एहि बीचमे अहाँ कहि सकैत छी जे नहि हो भाइ, हमरा देवता नहि हेबाक अछि। हमरा एहन हुनर नहि सिखबाक अछि जे लोक के उठ-बैस कराबी। आँखिक काजर निपत्ता क' दी। हमरा कोनो देश, प्रान्त, संस्था पर कब्जा नहि करबाक अछि। कब्जा क' कय की हैत? हमरा ने फायदा लेबाक अछि आ ने देबाक अछि। त' हम कहब जे तखन अहाँ अपने विचार करु जे अहाँ कोन जोकरक लोक छी। कोनो जोकरक लोक रहि गेल छी की नहि।

24 जुलाई 2014

*

टमाटर आ पियाजक सत्ता सुख

औ बाबू आइ-काल्हि स्वाद बदलि रहल अछि। जीह बदलि रहल अछि। रस बदलि रहल अछि त' समाजो बदलि रहल अछि। जेना समाजक इंजीनियरिंग बदलि रहल अछि तहिना स्वाद-रसक रेसिपी सेहो बदलि रहल अछि। एहि परिवर्तनक लहरि पर सवार जे नवका सत्ताधीश उभरला अछि से छथि टमाटर आ पियाज। एहि दूनूक सौभाग्यक वर्णन नहि हो। जय हो। जय हो। शुभ-लाभ सन टमाटर-पियाज आइ सत्ता-सिंहासन पर बैसि गेल छथि। लगैत अछि जे टमाटर आ पियाजक अभावमे रस-निष्पतिये ने हैत। रसाभास भ' जायत। जँ टमाटर आ पियाज नहि भेटैत अछि त' समूचा सामाजिक-संरचना चरमराय लगैत अछि। बत्तीस दाँतक बीच ठुमकैत, सौभाग्यशालिनी जीह छटपटाय लगैत अछि। विरह गीत गाब' लगैत अछि। सगर संसार मे अनघोल भ' जाइत अछि। घोल-फचक्का उठि जाइत अछि। अखबार आ टीवी नोरे-झोरे कान' लगैत अछि। टीवीक विभिन्न चैनल पर लाल-लाल टमाटर आ पियाज पर जतेक बहस होइत अछि ततेक साम्प्रदायिकता आ जातिवाद पर नहि। टमाटरक बहस साम्प्रदायिकताक बहस के पाछू ठेल दैत अछि। पियाजक बहस जातिवादक बहस के भुस्साथरि बैसा दैत अछि। लगैत अछि जे नीक दिन जँ ककरो आयल अछि त' टमाटर आ पियाजक आयल अछि।

आइ एहि टमाटर आ पियाजक आगू झुंगनी झाम गुड़ि रहल अछि। भट्टा भटाभट कपाड़ फोड़ि रहल अछि। परोर पेटकान देने अछि। कदीमा आ ओल भकलोल सन टौआ रहल अछि। टमाटर आ पियाजक भाग चमकल अछि आइ। एहि दूनूक एहन व्यक्तित्व बनि गेल अछि जे समस्त तरकारी समाज पर भारी पड़ि रहल अछि। जत' देखू टमाटर आ पियाजक स्वागत मे गाना-बजाना भ' रहल अछि। तरकारी बजार सँ उठि क' ई लोकनि सरकारी कार्यालय मे आसन जमा लेने छथि। जे सरकारी कर्मचारी लोक के देखि क' ठोर बिजका लैत छल से दाँत चिआरि क' टमाटर आ पियाज खरीदबा लेल

खेखनिया क' रहल अछि। किएक त' हुनकर चरित्र-पुस्तिका मे ई बात अंकित कयल जायत जे के, कते टमाटर आ पियाज बेचलनि। एम्हर सरकारी लोकक कोमल हाथ मे जा क' टमाटर आर लाल भ' गेल अछि। पियाज कोमलांगीक गुलाबी नयन के मात केने अछि। आइ-काल्हि टमाटर आ पियाज गौरव-बोध सँ भरल अछि। ओकर आत्मविश्वास देखबा जोगर अछि। सत्ताक एहन सुख आन कोनो तरकारी नहि भोगि रहल अछि। मोन पाड़ब त' मोन पड़त जे कहियो आलूओक राज रहै। मुदा अपन टेढ़पनीक कारणे सत्ता हाथ सँ छिहलि गेलै। भट्टा, झुंगनी, बोरा, सजमनि संग गठबन्धनमे ओ नाकर-नुकर कर' लागल छल। आलूक अहंकार एतेक बढ़ि गेलै जे अपना आगू ओ ककरो नहि गुदानय। खाली कोबी आ परोर के कने-मने मोजर दिअय। एहना मे एहि लोकतंत्री युग मे जे मौअति हेबाक चाही से आलूक भेलैक। ताहू मे पहाड़ी आ मैदानी मे बंटि क' त' आर ओ भाव-शून्य भ' गेल।

टमाटर आ पियाजक एहि गौरवपूर्ण सत्ताक जड़ि मे ओकर अद्‌भुत व्यक्तित्त्वक पैघ योगदान छैक। ओहि दूनू महान तरकारीक व्यक्तित्त्व आ कृतित्त्व पर शोध आइ समयक मांग थिक। ओकर रचनाशीलता प्रेरणादायक अछि। टमाटर आ पियाज जेना शाकाहारी आ मांसाहारी व्यंजनमे रस भरैत अछि से आन ककरो बुत्ताक बात नहि। मुरगा सन सत्ता-पुरुषक सत्ता-सूर्य अस्त भ' जेतनि जँ टमाटर आ पियाज हुनका छोड़ि देनि। गरीबक घर सँ पांच सितारा होटल धरि जकर एहन साम्राज्य हो ओकर सौभाग्यक वर्णन के क' सकैत अछि? एहन अनिवार्य आ अत्याज्य बनि जायब टमाटर आ पियाजक चारित्रिक विशेषता थिक।

14 अगस्त 2014

*

थाल आ कादो

थाल आ कादो अजुका चीज नहि छी। एकर अस्तित्व अदौ सँ अछि। जहिये सँ माटि अछि से किसिम-किसिम के माटि आ पानि अछि से किसिम-किसिम के पानि तहिये सँ थाल आ कादो अछि। थाल आ कादो संग जीबाक एक परम्परा अछि। जरूरत पड़ला पर हम सभ थाल बाटे चलि लैत छी। जरूरत पड़ला पर कादो क' कय बीया बाउग क' लैत छी। फेर थाल-कादो के पानि सँ धो क' हाथ-पैर साफ क' लैत छी। कखनो थाल-कादो एक-दोसरा पर फेकि क' मनोरंजनो क' लैत छी। कखनो थाल-कादो लेपि क' पाबनियो मना लैत छी।

थाल आ कादोक ई खूबी अछि जे ओ नरम आ कोमल अछि। जँ से नहि रहितै तँ ने धोअल होइते ने पोछल। ने अन्न उपजिते ने तीमन-तरकारी। ने फूल-पात होइते ने गाछ-वृक्ष। ई ओकर नरम आ कोमल स्वभावे छी जे ओकरा संग जीवनक एहन सामन्जस्य बनल अछि। जीवन मे जँ रंग अछि त' से नरम आ कोमल स्वभावेक कारण अछि। समाजक रंग-बिरंगी फुलवारी मे जे सुगन्धि अछि त' तकर जड़ि मे ई नरमी आ कोमलते छी। मुदा एहि नरमी आ कोमलता लेल माटि आ पानिक संयोग चाही। माटि-पानिक संस्कृति चाही।

मुदा एहि संस्कृति पर सान चढ़ा क', भेष बदलि क' कोना दाँत-मुँह कीचल जा रहल अछि? नरम आ कोमल कैल गाइक टूना जकाँ छड़पैत-दौड़ैत एहि शीतल भोर के गरम हवा कोना झरका रहल अछि? ई केहेन मौसम अछि जे भिनसरे-भिनसर देह-मोन के औल-बौल क' देलक अछि? की राजनीति माने खाली सख्ती आ गरमी होइ छै? की राजनीति माने खाली कठोरता आ कट्टरता होइ छै? एहन राजनीति कोन काजक जे माटि के सक्कत क' दिअय आ पानि के तप्पत? माटि के सक्कत क' ओकरा आँच देखा पजेबा बना लिअय। पानि मे तेजाब मिला ओकरा पानि नहि रह' दिअय। एक-दोसरा पर फेकय पजेबा। एक-दोसरा पर ढारय तेजाब मिलल पानि। माटि आ पानिक एहन उपयोग राजनीतिए क' सकैत अछि।

ई कोन राजनीति छियै भाइ, जे माटि आ पानि के बदलि रहल अछि। एहना मे कोना होयत थाल आ कोना होयत कादो। कोना उपजन अन्न। गरम आ सक्कत माटि सँ कोना जनमत बीया। कोना हैत गाछ-वृक्ष। कोना बनायब फुलवारी। कोना मनायब पाबनि थाल आ कादो सँ। माटि आ पानिक संयोग के बिना कोना चलत जीवन। नरम आ कोमल स्वभावक बिना कोना रचब संसार। कोना बसत दुनिया।

एहना मौसम मे हमर-अहाँक खेतिहर-मोनक की होयत। की होयत कोदारि आ खुरपी। नरम आ कोमल भारत लेल खेतिहर-मोन चाही। कोदारि चाही। खुरपी चाही। थाल आ कादो चाही। तखने उपजत अन्न। तखने बना सकब फुलवारी। तखन हैत जन-गणक विकास। ओ विकास जाहि मे समाजक अन्तिम व्यक्ति सुखी रहत। से राजनीति। सैह राजनीति....।

04 सितम्बर 2014

*

ई गन्दगी ओ गन्दगी

दरभंगाक एक मित्र के फोन केलियनि। ओ नहि उठौलनि। कने कालक बाद हुनक फोन आयल। कहलनि जे डेराक चारुकात लाउडिस्पीकर बाजि रहल अछि। घर मे किछु सुनाइ नहि दैत छल। ककरो सँ कोनो गप्प करब मुश्किल। डेरा सँ दूर आबि क' बात क' रहल छी। हम कहलियनि जे गाम चल जाउ। ओत' लाउडिस्पीकर सँ बाँचब। ओ कहलनि जे काल्हिये गाम जा रहल छी। हमरा खुशी भेल जे आब ओ ध्वनि प्रदूषण सँ बँचि जेताह। गाम मे वातावरण शान्त हेतैक। दोसर दिन ओही गामक दोसर मित्र के फोन केलियनि। ओ गामे मे रहैत छथि। हम गप्पक उत्साह मे रही। मुदा मित्र, हूँ हाँ क' कय रहि गेला। भेल जे आइ की भ' गेलनि हिनका? चिंता हुअ' लागल। पराते हुनकर फोन आयल। कहलनि जे की कहू? लाउडिस्पीकरक कारणे किछु सुनबे ने करैत रहियैक। एखन स्पीकर बन्द अछि। हमरा दरभंगाक ओ मित्र फेर सँ मोन पड़ला। ओ लाउडिस्पीकर सँ बचबाक लेल गाम जा रहल छथि मुदा गाम मे लाउडिस्पीकर हुनकर स्वागत मे तैयार बैसल अछि।

कने दिन पहिने झारखण्डक यात्रा पर रही। जंगल आ पहाड़ सभ सँ घेरल एक शान्त वातावरण मे प्रवास करबाक छल। ओ जगह कोनो शहर नहि रहै। सार्वजनिक उद्यमक एक शान्त ओ आकर्षक कालोनी रहैक। मुदा ओतहु विश्वकर्मा पूजा मे लाउडिस्पीकर आसमर्द केने रहय। आसमर्द नहि केने छल। किदन-कहाँदन, अर्र-दर्र गाना सुना रहल छल। तीन दिन रहलहुँ। तीनू दिन लाउडिस्पीकर सँ आक्रान्त रहलहुँ। विश्वकर्मा जी टुकुर-टुकुर तकैत रहला।

एम्हर देशमे झाड़ू-पोछा, साफ-सफाइ चलि रहल अछि। ओम्हर अमेरिको मे बहुत दिनक लागल झोल झाड़ल जा रहल अछि। रस्ता बनौल जा रहल अछि। रस्ता पर रबड़ बिछौल जा रहल अछि। एहि रस्ता पर गाड़ी बहुत स्मूथ चलै छै। स्पीड के बोध नहि होइत छैक। भारत मे मंत्री जी सभ

बड़का-बड़का डंटा लागल झाड़ू उठा क' घूमि रहल छथि। एत' झाड़ने फिरै छथि। ओत' झाड़ने फिरै छथि। गन्दगी मे रह' बला पर तमसा रहल छथि। दांत कीच रहल छथि। लोक सभ देखि रहल अछि मंत्री जी सभ केँ झाड़ू पकड़ने । फोटोमे देखब बड नीक लगै छै। हाथमे झाड़ू पकड़ने टी.भी.मे बाइट दैत। बाइट मे ठाम पर टारगेट करैत। धमकी दैत। अबै छी साफ कर'। तैयारी केने रहब। लोक के होइत छैक जे एहि बाइट सँ करमचारी सभ टाइट नहि होइ बला अछि। हाथक सफाइ आ घर-अंगनाक सफाइ मे बड़ अन्तर होइत छैक।

एहि सुनब आ देखबक बीच फेर सँ दू अक्टूबर आबि गेल अछि। आइ हम सभ प्रधानमंत्री के सेहो झाड़ू लगबैत देखब। साफ-सफाइ पर भाषण दैत सुनब। ओ लोक सभक मोन मे लागल झोल के झाड़बाक लेल कोनो नबका मंत्र देताह। विश्वास त' विश्वासे होइत छैक। ओहि मंत्र के जपला सँ मोन एकदम राफ-साफ भ' जायत। एकदम धोअल-पोछल। आब ओहि पवित्र मोन मे अमेरिका-चीन-जापान सभक वस्तु-जात के रखबा मे कोनो असोकर्य नहि होयत। ने देनिहार के घिन हेतैक ने लेनिहार के घिन। पैघ-पैघ गन्दगी लेल छोट-छोट गन्दगी के साफ करब जरूरी होइत छैक। विकास ओहिना नहि ने होइ छै। ओहि लेल बहुत किछु कर' पड़ै छै। सह' पड़ै छै।

02 अक्टूबर 2014

*

छुट्टी मे की करै छी ?

ई गप किछु वर्ष पहिने के छी। आफिस मे एकटा नबका साहेब आयल रहथि। ओ साहेब छुट्टी-तुट्टी किछु नहि बुझैत छलथिन। छुट्टियो दिन अनेरे आफिस खोलि देथिन। कोनो काज नहि, तैयो बैसल रहू आफिस मे। स्टाफ सभ बाजय जे साहेब के डेरा पर नहि नीक लगैत छनि। कियो कहय जे कनियाँ सँ झगड़ा भ' गेल छनि। कियो-कियो ईहो बाजय जे कनियेँ हिनका ठेल के आफिस पठा दैत छथिन। ककरो कहब रहै जे समय बितेबाक लेल साहेब के आफिसे उत्तम स्थान बुझाइत छनि। स्टाफ सभ के छुट्टी मे आफिस जायब नहि नीक लागै। घरक काज गड़बड़ा जाइ। मुदा करत की? बाघक मुंह मे के हाथ देत? एहना मे भोगनजी अपन कलेजा मजबूत केलनि। एक दिन साहेब जखन हुनका कहलथिन जे परसू ई सभ काज पूरा क' हमरा द' दिअय त' भोगनजी के मोन पड़लनि जे अरे, परसू त' छुट्टी छियैक। यैह अवसर छी जखन बात फड़िया लेबाक चाही। ओ साहेब के कहलनि जे, सर, परसू त' छुट्टी छै। रवि छियैक। साहेब एहि बात पर गर सँ हुनका दिस तकलनि। जेना ई कोन जन्तु आबि गेल अछि। फेर बजला, ओ, परसू छुट्टी छै। ऐँ...। छुट्टी मे की करै छी अहाँ? भोगनजी कहलथिन, छुट्टी मे भरि हफ्ताक लेल चीज-वस्तुक लिस्ट बनबैत छी। फेर सभ सौदा-बारी दोकान सँ कीनि क' अनैत छी। तइ पर साहेब कहलथिन जे रवि के त' दोकान सभ बन्द रहै छै। तखन भोगनजी बजलाह, नहि सर, रवि के त' सभ किरानाक दोकान खुजल रहै छै। एहि पर साहेब फेर पुछलथिन, आर की सभ करै छी छुट्टी मे? भोगनजी उत्तर देलथिन, भरि हफ्ताक कपड़ा सभ खीचै छी। एहि पर साहेब के जेना आश्चर्य लगलनि। कहलथिन, ऐँ, कपड़ा खींचै छी अपने सँ? धोबी के किए नहि दैत छियै? एहि पर भोगनजी बजलाह, सर, धोबी के कत' सँ देबै? बड़ पाइ लैत छै। ओत्ते पाइ कत' पाबी। एहि पर साहेब कहलथिन, ओ तखन त' अहाँ कंगाली विभाग मे काज करैत छी। भोगनजी सोचलनि जे एहि पर की बाजल जाय।

तें चुप्पे रहला। मुदा साहेब छोड़ै बला नहि छला। फेर पुछलथिन, छुट्टी मे आर की करैत छी? भोगनजी बजलाह, आर की करब सर, जे समय बचैत अछि ओहिमे किताब सभ पढ़ैत छी। कविता लिखै छी। कथा लिखै छी। एहि जबाब पर साहेब अपन आँखि के कपाड़ पर ल' गेला। फेर बजलाह, ऐँ किताब पढ़ै छी? कविता लिखै छी? कथा लिखैत छी। तखन त' अपनो दिमाग खराब करै छी आ अनको दिमाग खराब करै छी। भोगनजी कें एकर किछु उत्तर नहि फुड़ेलनि। चुपचाप बैसल रहला। तखन साहेब कहलथिन जे ठीक छै, जाउ। भोगनजी उठि क' विदा भ' गेला। मुदा एकटा बात भेल। साहेब फेर छुट्टी मे काज करबाक लेल ककरो ने कहलथिन। अपने अयबो करथि त' स्टाफ नहि आबय। खाली निजी सहायक सभ रहनि।

मुदा ई गप आब पुरान भ' गेल। आउट आफ डेट। विकास मे अवकाश बाबा आदम जमानाक गप। आब सभ छुट्टीक दिन आफिस खुजल रहैत अछि। कियो किछु बाजि भूकि नहि सकैत अछि। भोगनजी सेहो आब किछु नहि बजैत छथि। ओहो आब कोनो साहेब के छुट्टी मे सौदा-बारी करबाक, कपड़ा खिंचबाक, किताब पढ़बाक, कविता-कहानी लिखबाक गप नहि कहि सकैत छथि । आब त' पढ़बे-लिखब टा नहि बाजब-भूकब सेहो दिमाग खराबक कोटि मे चल गेल अछि। सभ एक-दोसरा के कहि रहल अछि, अहाँक दिमाग खराब अछि। त' की सभक दिमाग खराब भ' गेल छै?

10 अक्टूबर 2014

*

सहकारिता आ प्रतियोगिता

विकासक एहि युग मे सभ तरहक विकास भ' रहल अछि। लोकक विकास भ' रहल अछि त' जानवरोक विकास भ' रहल अछि। मनुक्ख आ जानवरक बात-व्यवहार मे सहकारिता आ प्रतियोगिताक प्रभावी भूमिका रहल अछि। मनुक्ख के देखि क' जानवर विकास क' रहल अछि त' जानवर के देखि क' मनुक्ख विकसित भ' रहल अछि। मूस, बिलाइ, कुकुर, गीदड़, हाथी आ शेर के देखि क' जँ अहाँके कोनो मनुक्ख मोन पड़ि जाय त' से एक स्वाभाविक गप छी। तहिना स्वाभाविक इहो अछि जे कोनो मनुक्ख के देखि क' अहाँके मूस, बिलाइ, कुकुर, गीदड़, हाथी आ शेर मोन पड़ि जाय। जानवर आ मनुक्खक एहि प्रकारक गुणात्मक विकास मे सहकारिता आ प्रतियोगिताक एक इतिहास रहल अछि। दूनू संग-संग चलल अछि। अहाँ जनैत छी जे एहन विकास कोनो एक दिन मे नहि भेल अछि। ई हजारो बरखक सहजीवन, शत्रुता आ मैत्री, घृणा आ प्रेमक परिणाम रहल अछि। एक दोसराक प्रति आकर्षण शुरुहे सँ रहल अछि। से आकर्षण कोना आ किएक उत्पन्न भेल सेहो सभ के बुझले अछि। मनुक्ख जखन घर-आंगन बनौलक, परिवार बनलैक त' ओहि मे जानवरो सभ के परिवारक एक सदस्य बनौलक । दूनू के एक दोसराक जरुरतियो छलैक। मूस आयल त' बिलाइयो आयल। बिलाइ आयल त' कुकुरो घरक सदस्य बनि गेल। सभक अपन-अपन उपयोगिता रहैक। सभक स्वभाव भिन्न-भिन्न रहैक। बिलाइक म्याँउ-म्याँउ लोक के नीक लागै त' कुकुरक नाङरि डोलायब सेहो पसिन्न पड़ै। एक-दोसराक बाजब-भुकब संग-संग चल' लागल। एहने सहजीवन मे बाजब-भुकब एक सँ एक्कैस होइत गेल। बाजब विकास करैत भुकब सन भ' गेल त' भुकबाक निरंतरता बाजब सन लाग' लागल। एहि दूनू शब्दक समन्वित विकासक जेना एक क्रमिक इतिहास अछि तहिना रंगल गीदड़क सेहो एक फुट्टे इतिहास अछि। जेना गीदड़ जंगल सँ पड़ा क' शहर दिस अबैत अछि तहिना मनुक्खो शहर सँ पड़ाक' जंगल दिस जाइत अछि।

गीदड़ के जेना शहर मे अपन रंग बदल' पड़ैत छैक तहिना मनुक्खो के जंगल मे अपना के बदलि क' जानबर सन बने पड़ैत छै। जेँ कि मनुक्ख जानबर सँ चालाक प्राणी अछि तैं ओ गीदड़ जकाँ लगले पकड़ा नहि जाइत अछि। ओ बहुतो दिन धरि यथार्थ के भ्रम बना क' रखने राखि सकैत अछि। ई मनुक्खे छी जे दन्तार हाथी के सेहो पोसुआ बना लैत अछि। नाङरि दिस सँ ओकर पीठ पर चढ़ि जाइत अछि। नाङरिक प्रति मनुक्खक ई प्रेम ने ओहिना छी आ ने आजुक छी। असल मे अपन नाङरि के ओ आइ धरि बिसरि नहि सकल अछि। नाङरि ओकर स्मृति मे आइयो जीवित छै। तैं नाङरि डोलबैत देखब नीक लगैत छै त' नाङरि डोलायब सेहो पसिन्न छै।

मूस, बिलाइ, कुकुर, गीदड़, हाथीक बाद शेर मनुक्ख के सभ सँ बेसी पसिन्न छैक। शेर के पोसुआ बनायब त' आरो पसिन्न छैक। शेर जंगल के राजा कहबैत अछि। शेर सँ प्रीति मे जे मजा छैक से मूस, बिलाइ मे कत' पाबी? आब त' स्वामीभक्त कुकरो अपन उपयोगिता खतम क' चुकल अछि। खाली प्रतियोगिता सभ लेल ओकर सार्थकता रहि गेलैक अछि। हाथी त' हरिहरो क्षेत्र सँ बिला रहल अछि। शेर सँ प्रीतिक मजा मे ओकर मार्केट भेल्यू बढ़ि रहल छैक। आबत' ओ सेलिब्रिटीक दर्जा पाबि चुकल अछि। से कोनो ओहिना नहि भेल अछि। मनुक्ख संग सहकारिता आ प्रतियोगिता मे राजा-महराजाक पोसुआ शेर, फेर चिड़ियाखानाक शेर, फेर सर्कसक शेर सँ मल्टीनेशनलक मशीनी शेर धरि पहुँचबा मे दूनू के बहुत पापड़ बेल' पड़लैक अछि। दूनूक एहि बदलैत आचरण मे एक-दोसराक गुलाम हेबाक इतिहास मिलल-जुलल अछि। आइ जँ दूनू मीलि क' नाङरि डोला रहल अछि त' से कोनो एक मास वा एक बरखक विकास थोड़े छी? आ की नहि?

13 नवम्बर 2014

*

किताब आ चकमक फर्श

तीन बरस पहिनेक गप छी। सरकारी भवनक कायाकल्प भ' रहल छल। ओकरा कारपोरेट लुक देल जा रहल छल। देबाल, कुर्सी-टेबुल, फर्श सभ चकाचक कयल जा रहल रहय। सभ किछु के जगमग, चमचम करबाक छलैक। एहन चकमक आ चिक्कन वातावरण से पुरना वस्तु सभ, संचिका, दस्तावेज, किताब जेना अवांछित भ' जाइत अछि। निर्मोह आ निर्मम भ' ओकरा सभ के फेकि देल जाइत अछि। ओहि समय देखतहुँ त' चैम्बर सभक आगू मे ढेरक पोथी-पतरा, संचिका सभक अम्बार भेटितय। लगितय, ओह, एहन महत्वपूर्ण दस्तावेज, एहन परिश्रम सँ लिखल रिपोर्ट, एहन सुन्दर सँ छपल किताब सभ एहि चकचकी मे केहेन लचार भ' गेल अछि। एकरा सभ के जेना कियो पुछनिहार नहि। होइते जे ठीके कहैत छै आब इतिहास क अन्त भ' रहल अछि। इतिहासक जेना कोनो प्रयोजने नहि रहि गेल छै। जे किछु छी से एकदम वर्तमान छी। वर्तमान जे जगमग अछि। चकचक आ चिक्कन अछि। एहन चिक्कन जाहि पर सदिखन पिछड़ि पिछड़ि जेबाक डर हुअय। जत' कनियो मैल-कुचैल लोक अपराध-बोध सँ जेना ग्रस्त भ' जाय। अपना के बेकार आ पिछड़ल बुझ' लागय। आत्महीनता अपन चांगुर मे जेना दबोचि लेतै ओकरा।

से आइ खाली सरकारी भवनेकटा हाल नहि रहि गेल अछि। राजनीति, संस्कृति, समाज सभक भवन चकचक भ' रहल अछि। ओकर गुम्बद आ फर्श जगमग भ' रहल अछि। एहन चकचक फर्श पर कोना वैसी, कोना चली, कोना खाइ-पीबी से सीख' पड़त। ओकर ट्रेनिंग लिअय पड़त। नहि सीखब त' खसि पड़ब। फेका जायब। कान-कपार फूटि जायत। एहि भवन सभमे जेबाक अछि त' सम्हरि क' जाउ। ध्यान राखू उज्जर, दपदप शीशा पर अहाँक अबढंगपनी मे भवनक गरिमा आहत ने भ' जाइ। अहाँक हँसब-बाजब सँ भवनक शान मे बट्टा ने लागि जाइ। अहाँक स्मृति, अहाँक इतिहास, अहाँक जीवन एहि जगमगाइत भवनक सोंझा कूड़ा-करकट ने भ'

जाय। से ध्यान रखबाक अछि अहाँके।

एहि जगमगाइत भवन सभमे अहाँक अक्षर, अहाँक लिपि, अहाँक भाषा, अहाँक साहित्य, अहाँक किताब, चित्र, कसीदा, शिल्प, हुनर बेकार आ निष्प्रयोजन भ' रहल अछि। सभ किछु के बहारि-सोहारि कातक बहरघारा मे बन्द क' देबाक व्योंत भ' रहल अछि। काल्हि जँ अहाँ अपना के तकै लेल ओहि भवन सभ दिस जायब त' किछु नहि भेटत। जे तकबाक अछि से कत्तौ ने भेटत। जे भेटत से अहाँके अपना सन नहि लागत। ओ अहाँक वस्तुए ने रहि जायत। ओहिठाम ओहि सभ वस्तुक इंतजाम रहत जे अहाँके अपन परम्परा, स्मृति सँ काटि देत। अहाँ भुलायल, बिसरभोर भेल टौआइत-बौआइत-चकुआइत रहब। एहि भवन सभ के एहने मनुक्ख सभ चाही जे अपना के गमा चुकल हो। जकर पलक कखनो झपकैत नहि हो। जेकरा सदिखन तराटक लागल हो।

मुदा मोन राखल जाय ई भवन सभ, ई चकमक फर्श एहने छी जे जल्दीए भखरि जाइत अछि। जेकर फर्श बरख पुरैत-पुरैत उखरि जाइत अछि। जकर दपदप शीशा चनकि जाइत अछि। लेकिन आइ ई लघुजीवी फर्श दीर्घजीवी अक्षर-किताब के अवांछित करबा पर उतारू अछि। आउ, एहि चकमक भवनक चिक्कन फर्श पर अबडेरल, अवांछित भेल जाइत किताब-पोथी के चुनि-चुनि क' सहेजी। सहेजी अपन स्मृति के। इतिहास के। साहित्य आ संस्कृति के। आउ, कने सहेजी अपना के।

04 दिसम्बर 2014

*

भ्रमक कुहेस

जमाना भ्रम के अछि। मौसम कुहेस के अछि। भोर मे कुहेस। राति मे कुहेस। दिन मे भ्रम। राति मे भ्रम। दिन मे वाद। राति मे विवाद। विवाद मे कठ विवाद। वाद मे भ्रम। विवाद मे भ्रम। वाद-विवाद मे भ्रम पसरि रहल अछि। पसारल जा रहल अछि। धान फटकल जा रहल अछि। झाड़ल जा रहल अछि। सूप चलि रहल अछि। चालनि चलि रहल अछि। एहि जड़ काला मे कुहेस पसरल अछि। एहि कुहेस मे ट्रेन लेट भ' रहल अछि। गाड़ी, बस सँ चलनाइ मुश्किल। पहुँचबाक अछि भोर मे। पहुँचब साँझ मे। पहुँचबाक अछि साँझ मे पहुँचब निशीभाग राति मे। घर पहुँचबा मे आफद। ने टेम्पो भेटत ने रिक्शा। एहना मे की कतहु अयनाइ-गेनाइ बन्द क' दी? सोचब-विचारब बन्द क' देल जाय? से त' क' नहि सकैत छी। सामाजिक प्राणी छी त' समाजिकताक निर्वाह त' करहि पड़त। मनुक्ख छी त' सोचब-विचारब बन्द कोना होयत?

मुदा एहि भ्रमक की करी? वाद-विवाद मे पसरैत, पसारल जाइत भ्रम के चीड़ि क' वास्तविकता के कोना देखि सकब? भ्रमक कुहेस मे सामाजिक आवागमन कोना कायम रहत? एहना मे वाद-विवाद सँ संवाद धरि कोना पहुँचि सकब? लगैए गाड़ीक हेडलाइट काज नहि क' रहल अछि। एहि भ्रमक कुहेस के चिड़बाक लेल तीक्ष्ण प्रकाश वला पियरका लाइट चाही। पियरका लाइटक बिना देशक गाड़ी नहि चलि सकैत अछि।

दिक्कत ई अछि जे बजार मे पियरका लाइट निपत्ता भ' गेल अछि। भरिसक प्रोडक्शन कम भ' गेलैक अछि। लगैए आब पियरका लाइटो लेल एफ.डी.आइ.क जोगाड़ कर' पड़त। जोगाड़ त' क' रहल छी। मुदा एहि लेल विदेशी व्यापारी तैयार नहि भ' रहल अछि। ओकरा बूझल छै जे देशमे सभ के हवागाड़ी किनबाक दम नहि छै। डाँड़ मे दमे ने आ मनोरथ बंश चलेबाक। हमरा सभ जकाँ बुड़बक नहि अछि ओ सभ। पहिने पानि मे आंगुर द' क' पानिक तापमान जाँचि लैत अछि। तखन पानि मे उतरैत अछि। ओ सभ एहि

हवा मे नहि उधिआइत अछि जे अबै जाइ जाउ। एहिठामक नदी मे बड़ पानि अछि। स्वच्छ आ निर्मल पानि। धार उमडाम क' भरल अछि। आउ, आबि क' हेलू एत' । चाहू त' बकछुछरु खेलाउ। मुदा नहि, ओकरा सभ के सभटा पता छै। एतेक दिन मे धारक की गति-दुर्गति क' देलियैक अछि हम सभ। तैं सवा सय करोड़क अनघोल कोनो काज नहि आबि रहल अछि। औ बाबू, सबा सय करोड़ मे दमगर कत्ते? कत्ते लोक पियरका लाइट खरीद सकत? लोक के लाइट किनबाक दमे नहि त' एफ.डी.आइ.किए आओत? एफ.डी.आइ. नहि आओत त' देशक गाड़ी कोना चलत?

हमरा सभ एकटा बात जनैत छी। गाड़ी नहि चलि रहल अछि से बूझैत छी। तैँ किछु ने किछु करैत रहैत छी। बैसि क' करब की? किछु त' करबे करब। नहि किछु त' एहि कोठीक धान ओहि कोठी मे धरब। लोक सभ के लगा देब नब कोठी बनबै लेल। नब कोठी बनि जायत त' पुरना कोठी मे राखल धान नबका कोठी मे राखब। फेर नबका कोठीक धान पुरना कोठी मे राखब। हमरा सभ के एहिठामक माटि-पानि जानल अछि। तुम्माक फेरा-फेरी बूझल अछि। एहिना धान के सुरक्षित रखने रहब। फटकब आ झाड़ब। धान बनल रहबाक चाही। धान बनल रहत त' जहिया मोन हैत चाउर बना लेब। दस टा जन एहि मे लागल रहत। लोक के हेतै जे ई सभ खूब काज क' रहल छथि। दस मोन चाउरक जोगाड़ केने छथि। देश समृद्ध भ' रहल अछि। देश आगू बढ़ि रहल अछि। भ्रम बनल अछि। ई भ्रम बनल रहल की कोनो कम उपलब्धि छी? एहि जड़काला मे ई भ्रमक कुहेस खूब जमि रहल अछि। सभ प्रसन्न अछि। देशक गाड़ी चलि रहल अछि। कुहेश सघन भेल जा रहल अछि। उज्जर-उज्जर चट्टान सन भ्रमक कुहेस गाड़ीक आगू धपाक्-धपाक् खसि रहल अछि। हम सभ पियरका लाइटक जोगाड़ मे बौआ रहल छी। एफ.डी.आइ. नहि हैत त' पी.पी.पी. मोडं हैत। पी.पी.पी. मोडपर नहि बनत त' फेर कोनो नब स्कीम बनायब। सूप रहल ताकय। चालनि रहल ताकय। ई जड़काला रहल ताकय। फेर जमाना भ्रम के रहबे करत। किएक त' बाहर छोड़ि अपना भीतर के ताकय?

25 दिसम्बर 2014

*

मुखौटा

ओआब जखन बाहर निकलैत छथि त' मुखौटा लगाइये क' निकलैत छथि। बिना मुखौटा हुनका आब कियो चिन्हिते ने छनि। बिना मुखौटाक परिचयक संकट एतेक बढ़ि गेल छनि जे ओ घरो मे बेसीकाल मुखौटा लगाइये क' रहैत छथि। आब त' हुनकर असली चेहरा लोक बिसरि गेल अछि। ध्यान अबैत छैक त' खाली मुखौटा। बिना मुखौटा मनुक्ख आगू नहि बढ़ि सकैत अछि से बात ओ बहुत पहिनहि बुझि गेल छलाह। ई ओ समय रहय जहिया मुखौटाक चलन शुरुहे भेल रहय। तहिया असली चेहरा आ मुखौटा मे भेद रहैक। लोक बाजय जे फल्लां मुखौटा पहिरने छथि। मुखौटा सँ फल्लांक आत्मविश्वास बढ़ि जाइन। किछु दोसर हेबाक अनुभूति होइन। एहि प्रकारें मुखौटा सँ आत्मविश्वास बढ़ेबाक चलन जोर पकड़ैत गेल। लोक कठोरता पर कोमलताक, असभ्यता पर सभ्यताक, लम्पटता पर सौम्यताक आ विषमता पर समताक मुखौटा पहीरिं अपन पहचान बनब' लागल। एक समय एहनो आयल जखन विभिन्न वादो पर मुखौटा लगाओल जाय लागल। उदारवाद आयल त' ओहू पर मानवीय कोमलताक मुखौटा लगायब जरूरी भ' गेल। फेर राष्ट्रवाद पर मुखौटा, सम्प्रदायवाद पर मुखौटा, धर्मवाद पर मुखौटा, जातिवाद पर मुखौटा, सभ मुखौटा लगा-लगा अपन लोक सन बनैत गेल। आत्मीय भ' गेल। लोक के लगलै जेना बिना मुखौटाक जीबिए नहि सकैत छी। एहना मे लगैत अछि जे मुखौटाक खाली भरोस रहि गेल अछि। मुखौटे टा अवलम्ब। अपन इतिहास तकबाक हो त' मुखौटा मे ताकू। संस्कृति के जनबाक हो त' मुखौटाक परम्परा पर विमर्श करु। जाति, धर्म, वर्ग सभ जेना मुखौटाक बिना अपरिचित लाग' लगैत अछि। आब परिचय मात्र एकटा-खाली मुखौटा। मुखौटा उतरि जायत त' परिचित छिड़िया-वितिया जायत। राष्ट्रीयताक रंग धोखड़ि जायत। धर्म-कर्म बिगड़ि जायत। मखौटाक बिना ने इहलोकक सुख भेटि सकैत अछि ने परलोकक। सभ प्रकारक विकास-व्यक्तिक विकास, समाजक विकास, देशक विकासक

मूल मे जेना मुखौटा अपन आसन जमा लेने अछि। एकटा मुखौटा के सधने सभ साध्य-साधन अहाँक मुट्ठी मे आबि सकैत अछि। तैं जपबाक हो त' मुखौटा-मंत्र जपू। सात समुद्र पार सँ इच्छित वस्तु, समृद्धि, प्रिया-प्रियतम जे चाहब से सात ताला तोड़ि अहाँक लग हाजिर भ' जायत। जरूरत एतबे जे मुखौटा के गहने रहू। जँ भ' सकय त' मुखौटा के सीबि लिअ' मुँह पर। प्लास्टिक सर्जरी सँ मुखौटे के अपन चेहरा बना लिअ'। किए! एहि दुआरे जे कने हुनकर गप सुनि लिअ' जे बिना मुखौटा के एक दिन घर सँ बाहर निकलि गेला। घर सँ बाहर निकलिते गलीक कुकुर सभ हुनका देखि भुक' लागल। पड़ोसी सभ आँखि गुड़ारि क' देख' लगलनि जे ई के अनजान लोक एहि घर सँ निकलल अछि। जे जूता सीबै बला छौंड़ा सभ दिन सलाम करैत छलनि से एक नजरि देखि क' फेर जूता सीब' लागल। ने तरकारीबला हुनका दिस देखलकनि ने किरानाक दोकानदार। इष्ट-मित्र कियो हुनका चीन्हि नहि सकलनि। सौंसे बाजार घूमि क' आबि गेलाह मुदा कियो, कनियो भाव नहि देलकनि। ओ अपस्यांत सन सौंसे सँ घूमि क' घर दिस पड़ेला त' घरो मे कनियाँ नहि चिन्हलकनि।

कतबो कहलथिन जे हम अहाँक पति-परमेश्वर छी। अहाँक बेटा-बेटीक बाप छी। मुदा किएक मोजर देथिन। तखन ओ झटसन मुखौटा पहीरि लेलनि। मुखौटा पहिरिते दुनिया अपन भ' गेलनि। सभ चीन्ह' लगलनि। तखने हुनका आत्मज्ञात भेलनि जे सत्य थिक त' खाली मुखौटा। आर सभ किछु माया थिक।

15 जनवरी 2015

*

अतत्तह

प्रकृति आ स्वभाव मे आइ-काल्हि अति के डंका बाजि रहल अछि। अतत्तह भ' रहल अछि। कोनो सीमाक आब मोजर नहि रहि गेल अछि। सेहन्ता त' सीमा पार। प्रेम त' सीमा तोड़ि क'। क्रोध त' अकास ठेकल। घृणा त' लस्साक पहाड़ सन। जे वस्तु से बेसिये। सड़क त' अग्गह सँ बिग्गह। गाड़ी त' हवा सँ गप करैत। इजोत त' देखले ने हैत। फर्श त' चलले ने हैत। गीत त' सुनले ने हैत। भाषा त' बजले ने हैत। जाड़ त' कनकन। हवा त' सनसन। लोक त' हनहन।

एहि जिनगी मे जाड़ कत्ते देखने हैब। मुदा एहि बेरूका जाड़ सन नहि देखने हैब। एहन कनकनी देखने रही कहियो! तहिना पछिला बेरक गरमी। जेठक दुफरिया। जेना विशालकाय पाड़ा खत्ता मे ढुकि गेल हो। सुनै छी अहू बेर ओहिना गरमी हैत। आगि बरसत। जेना प्रकृति अपन स्वभाव बदलि रहल अछि तहिना लोकक स्वभाव सेहो अपन प्रकृति बदलि रहल अछि। ओहो बाउन्ड्री लाइन सँ पहिने ठहरिते नहि अछि। कखनो त' बाउन्ड्री लाइन के पारो क' जाइत अछि।

आइ-काल्हि कोनो युवक कोनो युवती सँ प्रेम करैत अछि त' तेना प्रेम करैत अछि जे प्रेमिकाक एकोरत्ती एम्हर-ओम्हर डोलब वरदास्त नहि होइत छैक। कोनो पत्नी अपन पति के एना अंगेज लैत अछि जे पति महोदय ने घर पर रहि पबैत छथि ने घाट पर जा पबैत छथि। कोनो मास्टर चटिया के गलती भेला पर एहन सजाय दैत अछि जे ओकरा बौक-बहीर बना दैत अछि। कोनो अफसर अपन अधीनस्थ कर्मचारी के एना डेरबैत रहैत अछि जे करमचारी सपनो मे आफिस-आफिस बिसनाइत रहैत अछि।

घृणाक ई हाल अछि जे लागत कि जत' सुई सँ काज चलि जइतय ओत' तलबार भोंकि देल गेल अछि । क्रोध एहन जे एक-दू गोली जेकरा लेल काफी छैक ओकरा पर सय-पचास गोली झोंकि देल जाइत अछि।

लोक गारिये पढ़' लगैत अछि त' कोनो अवाच्य कथा बाँकी नहि

रखैत अछि। दुलार कर' लगैत अछि त' छातीक हाड़ कड़कड़ा दैत अछि। मित्रता देखब त' अतत्तह। शत्रुता देखब त' अतत्तह। लगैये मनुक्खक स्वभाव हद के पार क' गेल अछि। स्व अपना जग्गह पर बिकराल भेल जा रहल अछि। अजगर सन पसरल अछि समय के छेकने।

एहि अतत्तह समय मे गणतंत्र दिवस आबि क' चल गेल। अमरीकाक राष्ट्रपति बराक ओबामा आ हुनकर कनियाँ मिशेल ओबामा तीन दिन रहि क' चलि देलनि। एम्हर दिल्लीक चुनाव उफान पर अछि। सभ सीमा के तोड़ि क' घरे-घर हुलने फिरैये। एहन चुनावो नहि देखल छल पहिने। एहन गणतंत्र दिवस सेहो नहि कहियो देखने रही । ने एत्ते बेर बराक-बराक-बराक सुनने रही आ ने एत्ते बेर केजरीवाल-केजरीवाल सुनने छलहुँ। मित्रता आ शत्रुता एहन देखल नहि छल। अति के डंका जे ने करय!

05 फरवरी 2015

*

सपनाक रेल

आइ-काल्हि सपना देखब दिनचर्या मे शामिल भ' गेल अछि। जहिना अहाँ दाँत साफ करैत छी। मुँह धोइत छी। नहाइत छी। खाइत छी तहिना सपनो देखैत छी। सपना देखबा मे आब दिन-राति कोनो माने नहि रखैत अछि। जखन चाहू सपना देख' लागू। भिनसर मे देखू। दुपहरिया मे देखू। साँझ मे देखू। राति मे देखू। जखन चाहू सपना देखू। मुदा से एक्केटा सपना। धनीक बनबाक सपना। धनीक नहि त' धनीक सन लगबाक सपना।

माइनजन सभक कहब अछि जे सपना देखब विकास लेल जरूरी अछि। सपना नहि देखब त' विकास कोना करब। जेना कपालभाती नहि करब त' स्वस्थ कोना रहब? जेना विटामिन डी लेल रौद मे रहब जरूरी अछि तहिना विकास लेल सपना जरूरी अछि। तेँ आइ-काल्हि विकासक सपना हिट भेल अछि त' सपना सन विकासक टी.आर.पी. बढ़ल अछि। सपना माने धनीक होयब। विकास माने धनीकक विकास।

आइ गरीब खाली स्मृति मे रहि गेल अछि। इतिहासक वस्तु भ' गेल अछि। वर्त्तमान मे जे किछु अछि से धनीक अछि। जे धनीक अछि ओकरे लेल सभ किछु अछि। गरीब आ गरीबी के मोन पाड़ब अपमानक बात छी। स्वाभिमानक बात जेना धनीकक बपौती अछि। जे काल्हि गरीब छल से आइ गरीबनबाज नहि धनिकमिजाज अछि। घर वापसीक समयो मे अपन लोक-वेद लग घर घुरि क' अयबाक इच्छा नहि होइत छै। अपन गरीब भाइ-बहीनिसँ फराक ताड़क गाछ सन मस्त-मस्त डोलि रहल अछि। पहिने बड़क गाछ मातबर छल। आब ताड़क गाछ मातबर अछि। एहि ताड़क गाछक मातबरी एहि मे छैक जे ओ अपन लोक-वेद संग असमानता के चिआड़ि क' खूब चौड़ा क' दैत अछि। अहाँ छोट-छोट गछुली सन अकास दिस तकैत रहू। तकैत रहू हाइबें दिस। देखैत रहू अकास ठेकल बहुमंजिली टावर दिस। बिसनाइत रहू मॉल-मॉल। सपनाइत रहू बुलेट-बुलेट। दिन मे देखू। भोर मे देखू। सपना मे देखू बुलेट ट्रेन मे बैसल छी। ट्रेन पटरी छोड़ि क' छह इंच

उपर मे दौड़ि रहल अछि। हवा सँ कनफुसकी क' रहल अछि। पटरी सँ छह इंच ऊपर उठल ई विकासक रेल एहि फगुआ मे मुदा अहाँक लोक-वेद के घर वापसी लेल आश्वस्त नहि क' पाबि रहल अछि। अहाँ इतिहास मे पैसल तंत्र-मंत्र क' रहल छी आ अहाँक लोक-वेद वर्त्तमान मे तांगा चलल अलबेला गाबि रहल अछि।

सपना जँ धनीक बनि क' बुलेट ट्रेन मे बैसबाक अछि त' गरीब रथ मे बैसि क' धनीक सन लगबाक सेहो अछि। कने कम पाइ मे अमीरीक मजा लेब सेहो सपनेक कारबार छी। गरीबक साइनबोर्ड मे धनीकक सुख-सुविधा ई गरीब रथ आ बुलेट ट्रेनक बीच मे सपनाक रेलगाड़ी रफ्तार पकड़ि लेलक अछि। एहि रफ्तार मे एहि बातक कोन मतलब जे ट्रेन समय पर पहुँचैत अछि की नहि? स्टेशनक आउटर सिगनल पर कत्ते काल ठाढ़ रहैत अछि? टिकट लेल केहेन हड़हड़ खटखट होइत अछि? छोटी लाइन-बड़ी लाइन कत्ते दिन चलैत अछि? सुन्दर, चमचम टीशन पर कत्ते ट्रेनँ अबैत अछि? की ट्रेन पर चढ़बो गरीब लोक लेल सपना बनि रहल अछि? की सपनो मे फरक होइ छै?

23 फरवरी 2015

*

एहन लिलसा नहि देखल छल

औ बाबू एहन लिलसा नहि देखल छल। लगैत अछि जे ई लिलसा त' हनुमानजीक नाङरि जकाँ बढ़ल जा रहल अछि। कन्टरक कन्टर तेल आ थानक थान कपड़ा लागल जा रहल अछि। लगैए आब ई लंका दहन क' के छोड़त। जेकरा देखू से लहक-चहक मे मातल अछि। एक सँ एक डिजाइनक वस्तु-जात। कपड़ा-लत्ता। जुता-छाता। सलबार-शूट। तै पर सँ राशि-राशि के पाग आ पगड़ी। कोकटी पाग सँ बढ़ि क' आब मिथिला पेंटिंगक डिजाइनदार पाग धरि लिलसाक चतरब अलबत्त अछि। उज्जर लत्ताक पगड़ी सँ ल' क' मोदीजीक लाल-पीयर-हरियर छींटदार चुनरीनुमा पगड़ी धरि पहुँचबा मे संस्कृतिक चारु अध्याय पसरल अछि। लगैए बिना पाग आ पगड़ी के ई राजनीतिक संस्कृति 'मेक इन इंण्डिया'क उत्सवी वातावरण बनाइये ने सकैत अछि। लगैत इहो अछि जे ई लिलसा एकदम सबा सोलह आना 'मेड इन इण्डिया' अछि। एहि राजनीतिक लिलसा मे खुजल माथ बला सभ कतबाहि मे ठाढ़ भ' पाकल केश नोचैत रहि जेता। एहन लहटगर वेश-भूषा मे देखि क' के नहि कुर्बान भ' जायत।

एहन लहटगर अंगा आ एहन चहटगर गप-सप। लप-लप लिअ' आ धप-धप खाउ। जीहोक एहन सौभाग्य नहि देखने होयब। जेहने गुलगप्पा सन खेनाइ तेहने गिलौड़ी सन गप। जेहने तीत-चोख तीमन तेहने रेजी चक्कू सन बोल।जेकरा पाबय छकड़ि दिअय। ओध-वाध क' दिअय। बत्तीस दाँतक बीच एहि कोमल जीहक किरदानी देखि क' सभक अकिल गुम अछि। मुदा जीह अछि कि मानिए नहि रहल अछि। तहिना आँखि अछि कि हटिये नहि रहल अछि। जीबी त' की-की नहि देखी। देखी आ भोगी। कहै बला त' कहैत छथि जे ई आँखि आ जीह पहिनहु छल। मुदा हनुमानजीक नाङरि सन लिलसा नहि छल। एहि लिलसा के बढ़ेबा मे तेल-पानिक इंतजाम ई सहस्त्रबाहु बजार क' रहल अछि। एहि बजार के सहस्त्रबाहु बनेबा मे राजा आ बेपारी दूनू घाड़ाजोरी केने छथि। जखन राजा आ बेपारी मीलि क' बजार

के बढ़ौता आ लोक मे लिलसा जगौता तँ आँखि आ जीह नङटे नचबे करत। ई सहस्रबाहु बजारे छी जे एकटा अंगा बजार सँ उठैए आ सौंसे अकास के छेकि लैत अछि। ई अकास सँ पताल धरि पसरल बजार त' आब पताल मे जाइत गंगा के सेहो धो-माँजि क' चमका दैत। स्वच्छ आ निर्मल क' देत। हड़हड़ सत्ता... हड़हड़ बजार।

लिलसाक ई कारोबार जेना बढ़ि रहल अछि से आम के खास बना रहल अछि। एकदम गुलाबखास। आब त' आर.के. लक्ष्मण सेहो नहि छथि जे आम आदमी के कोनो कोन मे ठाढ़ रखता। आब ओकरा दुर्गन्जन सँ के सतर्क करत? जखन 'आप' बला सभ सेहो अपना के लिलसा सँ नहि बचा सकल त' के, ककरा बचाओत?

19 मार्च 2015

*

गुनक करु मान

ने रुपे नीक ने रंगे नीक। जे हित करय सेहे नीक। सुन्नर महकारीक जंगल बास। काठ सन कुसियारक घर-घर चास। ने बयसे जेठ ने देहे जेठ। जकरा गियान रहै सेहे जेठ। लाल महकारी कें पैरक ठेस। कारी जामुन बनय सनेश। कुल की? बाप की? गुनक करु मान। सितुआक पुत मोतीक के हयत समान।

औ बाबू, आब त' हमरा सभ चुनरी-पटोर पहिरने, गहना-गुड़िया सँ लदल, असाहनि-पसाहनि सँ सजल समय मे जीबि रहल छी। एहना मे एहन आडम्बरहीन, निर्मल, प्रकृतिक विशाल क्षेत्रक अनुभव सँ भरल हीरामनक बोल पर किए ध्यान देब। जन समाज मे पसरल एहन फकड़ा सभ कत' बिला रहल अछि ताहि पर किए सोचब। किए? किए त' हम सभ आब कने बेसिये बुद्धिमान भ' गेल छी। सुकरात अपन एक भाषण मे कहने रहथि जे ओ देखलनि कि बुद्धिमानीक लेल जिनक ख्याति शिखर पर अछि, प्रायः हुनका मे ओकर अभाव सभ सँ बेशी अछि। मुदा जिनका जनसाधारण कहि क' लोक छोट नजरि सँ देखेत अछि, वैह सीखबाक लेल बेसी योग्य छथि। वस्तुतः बुद्धिमान वैह अछि जे सीखबाक हेतु बेसी योग्य हो। जे सदिखन सीखबाक लेल तत्पर रहय। त' हम सभ जे आब पण्डित भ' गेल छी से सभ एहेन फलेल-फँचाड़ि-फक्कड़ कवि सभक पकड़ा किए सुनब? सुनबो करब त' ओकरा पिछड़ल, गमैआ, अनपढ़, निरक्षर समाजक चित्र मानि क' कान-बात किए देब? आब त' हम सभ रुप देखैत छी। रंग पर लोभाइत छी। सोन पर लुधकैत छी। गोराइ दिस परकि गेल छी। फेयर एण्ड लभली पर मोहित भ' रहल छी। एहना मे कारी जामुन के किए सनेश मे ल' जायब? हमरा सभ त' एहन मधुमेहक समयो मे अंगूरे के माथ पर बैसोने छी। सेबक भजन-कीर्तन मे लागल छी। ओकरे रुप-गुन पर लोभायल छी। किएक त' अंगूर आ सेब हमरा पैघ लोक हेबाक अहंकार दैत अछि। एहि अहंकारी समय मे कारी-कारी फलेना जामुन सँ दोस्ती हमरा छोट लोक नहि बना देत?

पद प्रतिष्ठा पर आँच नहि लगा देत?

ई कोना भेल जे हम सभ गुनक मान नहि द' रुप-जालक मोह-पाश मे ओझरा गेलहुँ? जत' सोनो मे सुगन्धि ताकल जाइत छल ओत' फूलो सँ सुगन्धि बिला गेल? ई कोना भेल जे हित-अहितक बात बिसरि पैघ-छोटक फेर मे पड़ि गेलहुँ? विविधताक आवेसी नहि रहि क' एकतानताक सेवक भ' गेलहुँ? एना एक दिशाह, एक भगाह किए भ' रहल छी हम सभ?

मानल जे हम सभ शहरुआ भ' रहल छी। बजरुआ बनि रहल छी। शहर-बजार हमर जरुरति भ' सकैत अछि। ई बूझल जा सकैत अछि जे शहर-बजारक बिना काज नहि चलि सकैत अछि। मुदा तेँ कि अपना हित-अहित के बिसरि जाइ? विवेक के लॉकर मे बन्द क' दी? हित-अहित केनिहार के चीन्हि नहि सकी? जे अपन हित-अहित नहि बूझि सकय एहन बुद्धि, एहन हुनर ल' क' की करब? सीखबाक लेल, हितकारी गुन के गुनबाक लेल आऊ, एहि चकमकी के भेदि क' गुनक मान देब शुरू करी। आऊ, शहर-बजार मे रहियो क' कने गमैआ भ' जाइ।

09 अप्रैल 2015

*

लड़बाक नाम जीवन

औबाबू, भूकम्पक एहन अनुभव एहि सँ पहिने नहि भेल छल। एत्ते काल धरि सेहो नहि भेल छल। तीन-चारि दिन धरि एना लगातार कतहु भूकम्प होइ। भेल एक बेर-दू बेर। एना साठि-सत्तरि बेर झटका पर झटका। एहन विनाश। एहन हड़कम्प! देखल नहि छल। भोगल नहि छल। पटना मे त' हम सभ सुरक्षित छी। मुदा गाम-घर मे रहैत अपन लोक-वेद, नेपाल मे रहैत अपन इष्ट-मित्र, सर-सम्बंधित लेल मोन व्याकुल अछि। जे चल गेल तकरा लेल गहींर संताप अछि। जे बचल अछि तकरा लेल चिन्ता। ओह, प्रकृतिक एहन प्रकोप! से लगातार विभिन्न रूप मे। बिहाड़ि-पानि। ओला-वृष्टि। चक्रवाती तूफान फेर भूकम्प। लगैत अछि प्रकृति एकदम कचकचा क' दाँत पीस रहल अछि। उजाड़ि क' छोड़त जीवन के। जीवन आ जीबाक साधन पर संकट पहिन्हुँ रहल अछि। मुदा विकासक एहि घटाटोप मे जीवनक ई दुर्दशा बेसी दारुण भ' गेल अछि।

पहिने बिहाड़ि-पानि, ओला सँ खेत मे अन्न, अन्य नगदी फसल नष्ट भेल । आशा आ मनोरथ पर ठनका खसल। जीवन-निर्वाह पर संकट आयल। करजा सँ ओध-बाध भेल खेतिहर-किसानक जीवन संवल एकदम छहोछित भ' गेल। जे संघर्ष लेल विख्यात छल से आत्महत्या लेल विवश भ' गेल। हमरा सभक लेल ई बहुते लज्जास्पद बात थिक। ग्लानिक बात छी। तमाम सरकारी, सहकारी आ निजी बैंकिंग व्यवस्था मीलियो क' गामक महाजन सँ ऋण लेबाक विवशता के खतम नहि क' सकल अछि। महाजनी व्यवस्थाक आइयो चलैत रहब दुखक बात अछि। खाद-बीजक दाम, लगातार होइत प्राकृतिक प्रकोप, सामाजिक भावनाक लोप, बढ़ैत लागत खर्च, लाभप्रद बजारक अभाव सभ मीलि अन्नदाताक जीवन के तहस-नहस क' देलक अछि। जेना एकदम असगर पड़ि गेल अछि खेतिहर-मजदूर। तै पर एहन संवेदनहीन आ नाटकीय राजनीति। अलबत्त बाबू, अलबत्त! आब अत्तह भ' रहल अछि। कृपया धूरा-गर्दा झारल जाय। खेतिहर-किसान-बटइदार के

तत्काल आर्थिक-सामाजिक संवल देल जाय। निराशा-हताशा सँ बचाओल जाय।

लगैत अछि जान-मालक एहन क्षति आ विभीषिका मे जिजीविषा आ मृत्यु भय सँ लड़बाक प्रयोजन दूनू प्रसांगिक भ' उठल अछि। एहना मे राजनीति त' यैह अछि जे लोक के बचाओल जाय। ओकर दुख, पीड़ा, संताप के कम करी। मनुक्खक जीवन संग की राजनीति! दुखक एहि घड़ी मे मनुक्ख के मनुक्ख बूझल जाय, भोट नहि। भोट त' हेबे करतै, प्राण बचतै त' सभ किछु हेतै।

हिमालय आ नेपाल संग हमरा लोकनि जुड़ल छी। एकदम नाभिनालबद्ध छी। हमरा लोकनिक भूगोल, इतिहास, संस्कृति, जीवन सभ एक अछि। एक्के पेट सँ जनमल। हमर सभक जीवन हिमालय सँ एकदम सम्बद्ध अछि। एहना मे ओकर भूगोल, पर्यावरण के चिन्ता करब हमरो सभक काज। विकासक नाम पर कंक्रीटक जंगल, डैम, दन्तार सड़क, परमाणु संयंत्र, ई उद्दाम लोभ-लाभ, प्रकृति संग कुश्ती आब बहुत भेल। जीवने लेल ने विकास। विकास सँ जँ जीवनक विनाश हुअय त' एहि विकास सँ लड़य पड़त। एहि तरहक राजनीतिक-व्यापारिक सत्ता सँ लड़ब, जीवन के बचेबाक लड़ाइ की नहि थिक? लड़ब आइ सरिपहुँ जीवन-धर्म भ' गेल अछि।

30 अप्रैल 2015

*

भागब त' भागि क' कत' जायब?

औ बाबू ई कहबियो सभ खूब अछि। भागब त' भागि क' कत' जायब? बहुत कमे लोक होइत अछि जेकरा अपन गन्तव्य पहिने सँ बूझल रहैत छै। जेकरा सभटा पहिने सँ बूझल रहैत छैक से वस्तुत: भगैत नहि अछि। ओ त' समधानि क' डेग उठबैत अछि। पहिने सँ करार क' लेने रहैत अछि। सभ किछु ठेकानि, ठेकना लेने रहैत अछि। एहन लोकक गप नहि हो। मुदा जे अपन-आन परिस्थितिवश कतहु विदा भ' जाइत अछि, से कहि क' बा बिना कहने से असल मे भगैत अछि। बिना कोनो निश्चित गन्तव्य के। ई भगबाक परम्परा जानि नहि कहिया सँ चलि रहल अछि। घर सँ, गाम-शहर सँ, प्रान्त सँ, देश सँ, फेर एहि मृत्युभुवन सँ, लोक भगैत अछि। भागल चल जाइत अछि। ई भगबो कैक प्रकारक रहल अछि। जिम्मेदारी सँ। भावना मे। झगड़ा-झंझटि मे। ईश्वरक खोज मे। लोक-कल्याण लेल। दुखक निदान लेल। जीवन पर संकट सँ प्राण रक्षा लेल। अकाल सँ। बाढ़ि सँ। प्राकृतिक प्रकोप सँ। भूकम्प सँ। ई भागब मोन सँ होइत अछि त' वेमोनो सँ होइत अछि। घर लेल लोक बेहाल रहैत अछि। त' घर लोक के बेहालो क' दैत छैक। लोक वृन्दावन पड़ाइत अछि। अयोध्या पड़ाइत अछि। जंगल पड़ाइत अछि। हिमालय मे चल जाइत अछि त' रोजी-रोटी लेल मोरंग, असाम, बंगाल, पंजाब, बम्बई, दिल्ली-हरियाणा, चीन-जापान, इंग्लैण्ड-अमेरिका सेहो पड़ाइत अछि। अरब-सिंगापुर जाइत अछि।

जे भगैत अछि से कम्मे घूरि क' अबैत अछि। जेत्तहि धड़ तत्तहि घर। वस्तुत: एहन लोक घूरि क' अयबाक लेल नहि भगैत अछि। जत' रहैए ओत्तहि लोक-वेद बना लैत अछि। ओहीठामक समाज मे रमि जाइत अछि। ओकरा अपन पहिलुक दीन-दुनिया मोन नहि रहि जाइत छै। एहन लोक मोन सँ 'वेवतन' होइत अछि। मुदा जकर मोन मे कोनो 'वतन' बसैत छै, अपन निजी संसार रहैत छै से फेर घुरि क' अबिते टा अछि। एहन बहुतो लोक घूरि क' अपन गाम आबि रहल अछि। अपन शहर घूरि रहल अछि। अपन

गाम-शहर लेल किछु क' रहल अछि। ओ एहि कचोटक संग भागल रहैत अछि जे ओकरे जकाँ ओकर समांग आ समाज के नहि भाग' पड़ै। एहन लोक घूरि क' किछु करैत अछि। समाज के किछु दैत अछि। वस्तुतः एहने लोक पैघ लोक कहबैत अछि। कोनो व्यक्ति विलक्षण एहि दुआरे नहि होइत अछि जे ओ जीवन मे की बनि गेल। विलक्षण एहि दुआरे होइत अछि जे समाज के की देलक। जिनका सभ के हमरा लोकनि मोन पाड़ैत छी त' से वास्तव मे हुनकर देन के मोन पाड़ैत छी। तैं भगबा मे कोनो हर्ज नहि छै। भगै छी त' भागू। मुदा फेर कहियो घूरियो के ताकू। घुरियो क' आउ। अपन विलक्षणताक उपयोग एना करु जे अहाँ सन फेर ककरो नै भाग' पड़ै। भगबाक अछि त' गौतम बुद्ध सन भागू। यात्री-नागार्जुन सन भागू। जिनका भगलो पर अपन भूमिक लोक कहियो नहि बिसरलनि। किएक त' ओ एहि कहबी के मोन रखलनि जे भागब त' भागि क' कत' जायब?

21 मई 2015

*

नामी भेल पटनाक गरमी

पटना बहुतो चीज लेल नामी अछि। धनतेरसमे सय-दू-सय कार के बुकिंग लेल नामी अछि। अक्षय तृतीयामे करोड़क करोड़ के सोना खरीदबाक लेल नामी अछि। गली-मुहल्ला मे गगनचुम्बी मकान सभक लेल नामी अछि। जमीनक जरसीमन लेल नामी अछि त' अपार्टमेंटक दाम लेल सेहो नामी अछि। पटना आइ बिहारक राजधानिये लेल नामी नहि रहल, मातबर शहरक लेल सेहो नामी भ' गेल। एहनामे ओ गरमी लेल नामी नहि होइतय त' की से लाजक बात नहि होइतैक? मुदा नहि, आब से लाजक बात नहि रहल। पटना गरमी लेल नामी भ' गेल। अपन बिहारक सभ सँ बेसी गरम शहर हेबाक गौरव प्राप्त कर' जा रहल अछि। एहि मामिला मे अदौ सँ टॉप पर रहनिहार गया के आब पाछू छोड़बा पर उतारु अछि। औ बाबू, पटनाक गरमी नामी कोना नहि होइतय? ओकरा त' नामी हेबाके रहै। जखन सँ दिल्लीक सरदी नामी भेल तखने सँ पटना के अपन हीनताक बोध हुअ' लगलैक। छटपट कर' लागल। राष्ट्रीय अस्मिताक आगू क्षेत्रीय अस्मिताक लतखुर्दनि कतेक दिन बरदास्त करितय? इहो कोनो बात भेलै? अहाँ देशक राजधानी छी त' लोकक हाड़ कँपकपा देबै आ हम प्रान्तक राजधानी छी त' किछु ने करु? हमहूँ लोकक हड्डी गला देबै। देहक पानि सुखा देबै। त्राहि-त्राहि मचा देबै। कहलकै जे...। दिल्लीक ठेसी हम बरदास्त नहि क' सकैत छी।

एहनो बात नहि छै जे पटना गरमी लेल ओहिना, अलगट्टे नामी भ' गेल अछि। एहि मे ओकर दस हजारी मनसबदार छोट शहर बहादुर सभक सेहो योगदान छनि। पँचहजारी मनसबदार गाम चौधरी सभ सेहो अपन कान्ह लगौने छथि। जँ पटना पैंतालीस पर छथि त' जिल्लाक शहर आ पंचायतक गाम सेहो चालीस सँ उपरे। मातबर बनबाक नशा एखन सौंसे पसरल अछि। सभ पावरफुल हुअ' चाहैत अछि। शक्तिशाली, महाशक्तिशाली। देश जखन महाशक्तिशाली भ' रहल अछि त' प्रान्त, जिला, अनुमण्डल, प्रखण्ड,

पंचायत आ गाम किएक नहि हैत? आ बाबू, शक्तिशाली बनबाक लेल लोकक हाड़ कँपकपाब' पड़ैत छै। हड्डी गलाब' पड़ैत छै। पानि सुखाब' पड़ैत छै। त्राहि-त्राहि मचाब' पड़ैत छै। गाछ-वृक्ष के उजाड़' पड़ैत छै। कंक्रीटक जंगल बनाब' पड़ैत छै।

एहन पावरफुल गरमी मे जिनका नेनपनक आमक गाछी मोन पड़ैत छनि। 'ओह' ! बाप रे बाप !' करैत गाछीक सघन वृक्षक तर मे हरियर सब्जी पर धम्म सँ पड़ि रहबाक मोन करैत छनि। सुपक्क गोपी आ गाछक चौकी तर अलसायल, मुँह पर छिड़ियालय केशक लट मोन पड़ैत छनि आ फेर आम खयबाक मुँह सेहो मोन पड़ैत छनि त' से अपन स्मृति के मोने मे राखथु। आब ने ओ नगरी ने ओ ठाम। इनार-पोखरि बिलायल, नदी बिलायल। गाछी-कलम बिलायल। आब त' फोर लेन सड़क सँ धम्म सन गाम पहुँच जाथु । आ ओतहु रजधानीक सुख लेथु। गरमी सँ त्राहि-त्राहि करथु। लू क प्रतिकार ताकथु। मातबरो कहेबै आ गरमीयो ने सहबै से कोना हैत? जीय' हो पटनाक गरमी आ मातबर सभक महाशक्तिशाली देश...। की राष्ट्रीय आ क्षेत्रीय आस्मिताक टकराहटि अछि भाइ! केहेन सरदी आ केहेन गरमी?

11 जून 2015

*

अहंकार आ धोधि

अहंकार आ धोधि एखन बढ़न्ती पर अछि। सभ चीजक एकटा समय होइ छै। सभक कखनो उत्थान होइ छै त' कखनो पतन होइ छै। एहि मे कोनो शक नहि जे अहंकार आ धोधिक एखन उत्थान-काल चलि रहल अछि। अहंकार आ धोधि एखन बहुचर्चित भेल अछि। ई अहंकार आ धोधिक उत्थानेक प्रताप छी जे रावण आ कुम्भकरण दूनू एक्के समय मे प्रासंगिक भ' उठल अछि।

जत' देखू अहंकारक चर्चा अछि। जत' अहंकारक चर्चा नहि अछि ओत' धोधिक चर्चा अछि। अहंकार नहि त' धोधि। धोधि नहि त' अहंकार। अहां लग कोनो उपाय नहि बचल अछि। कोनो एक के चर्चा त' करहि पड़त। चर्चा नहियो कर' चाहब त' चर्चा सुनइये पड़त। अहंकार आ धोधिक एहि प्रकारें मुख्यधारा मे आबि गेला पर अहां सोचि सकैत छी जे दूनू मे फेर कोनो गुप्त समझौता भ' गेल अछि। मुदा प्रकट रूप मे दूनू एक-दोसरा पर निशाना लगा रहल अछि। तों हमरा पर निशाना लगा, हम तोरा पर लगबैत छी। दूनू सहजें मुख्यधारा मे आबि जायब। अहंकार आ धोधिक मुख्यधारा मे अयबाक पाछू एकटा आर कारण भ' सकैत छै। सभ के होइ छै जे हमरा मे कोनो अहंकार नहि अछि। जे छी से स्वाभिमान छी, मुदा अनका मे ओ अहंकार के लगले चीन्हि जाइये। देखू त' केहेन अहंकारी, अछि! तखने सँ लोक के अनकर अहंकार के खिस्सा रस ल' क' सुनब' लगैत अछि। तहिना जकरा कने छोट धोधि छै से अपना सँ पैघ धोधि के तकने फिरैत अछि। ओकरा ईर्ष्या होइ छै जे एकर धोधि केना एते पैघ भ' गेलै? हमर किए नहि भेल? हम एकरा सँ कोन हिसाबें कम छी। त' अनकर धोधि पर व्यंग करब शुरू करैत अछि। हास्य करैये। एहि क्रम मे अपन छोट धोधि बिसरि जाइत अछि। मोन रहैत छै त' अनकर पैघ धोधि। त' एहि चर्च-वर्च सँ होइत ई छै जे अहंकार आ धोधि एकदम सोझा-सोझी भ' जाइत अछि। अहंकार धोधि के देखैये आ धोधि अहंकार के। दूनू मे कोनो गप-शप त' नहि होइ छै मुदा

इशारा-पाती होइ छै। कनखी-मटकी होइ छै। दूनू मोने-मोन गुड़-चाउर खाय लगैत अछि। चोरा क' एक-दोसरा के सेल्फी पठब' लगैत अछि। मुदा प्रकट मे ओकर सिपहसालार सभ एक-दोसरा पर चांदमारी करैत रहैत छै।

एक बात सत्त जे ई अहंकार आ धोधि शत-प्रतिशत भारतीय अछि। तैं ई दूनू 'मेड इन इंडिया' अभियान मे अपन-अपन झंडा लहरायब शुरू क' देने अछि। अहंकार के झंडा पर तेलिया सांप के चित्र छै। धोधि अपन झंडा मे गनगुआरि के चित्र लगौने अछि। दूनूक जबर्दस्त मार्केटिंग चलि रहल छै। टीभीक चैनल सभ एकर विज्ञापन सँ भरल रहैत अछि। सोशल मीडिया तेलिया सांप आ गनगुआरि पर रिसर्च क' रहल अछि। अहांके ई त' नहि भ' रहलए जे फेर चुनावक मौसम आबि रहल अछि?

02 जुलाई 2015

*

नहि खायब त' जुनि खाउ

औ बाबू जहिया सँ ने खायब आ ने खाय देबक चर्चा शुरू भेल अछि तहिया सँ लोक खेनाइ-पीनाइ आ खुआएब-पीयाएब बन्द क' देलक अछि। फल ई भेल अछि जे ने आब लोक के कत्तौ खाइत-पीयैत देखब आ ने खुऔनिहारक प्रशंसा मे गबैत देखब। बूझू त' एहि सँ एक नीक परम्परा नष्ट हेबा पर बिर्त्त अछि। आह, केहेन सुन्दर परम्परा रहय। लोक जतबे खाइत रहय ततबे गबैत रहय। जेना खाइत रहय तेना गबैत रहय। जतबा काल खाइत रहय ततबा काल गबैत रहय। जेकर खाइत रहय तेकर गबैत रहय। जेहेन खाइत छल तेहेन गबैत छल। मुदा आब ने ओ नगरी आ ने ओ ठाँओ-पीढ़ी। ई की फुड़ि गेलनि श्रीमान् मोदीजी कें? फुड़ि गेलनि त' मोने मे रखितथि। ठोर पर किएक अनलनि? आह, सभ किछु कतौ बाजले जाय। सुआइत कहै छै जे पूर्वाधिकारी आ उत्तराधिकारी एक दोसराक विपरीत होइत छै। आब यदि बाजिये देलनि त' बाजि क' बिसरि जइतथि। एना कतहु बाजल गप के पकड़ि क' बैसल जाय? औ बाबू एना जँ भोज-भात बन्द क' देबै त' नीक दिन कोना औतै ? बिना खाइन-पीयन के कतहु नीक दिन होइ।

ई खाइन-पीयन एहन दिन मे बन्द भ' गेल अछि जखन सौंसे बजार मे भोज्य पदार्थक अमार लागल अछि। किसिम-किसम के मेबा-मिठाइ के पहाड़। राशि-राशि के नोनगर-चहटगर खेत-पथार। जीह सँ पानि खसब' बला गाछ-वृक्ष। ढेकरि क' पानि पीबाक लेल नदी-पोखरि-झरना। एहन रसना-विलासक समय मे ई ने खायब आ ने खाय देबक प्रतिबन्ध कोन दिनक वापसी छी से नहि जानि! लगैये जीहक सभटा रस सुखा जायत। स्वाद-कलिका सभ हाकरोस कर' लागत। हे भगवान, एहि कलिका सभक कोन अपराध? किए एहि भोगक कली सभ के हठयोगक दुख पड़ि गेलै? जत' रसक धार बहैत अछि ओत' मरुस्थलक बालु किए उड़िएबाक ब्योंत भ' रहल अछि? जखन रसे नहि रहत तखन छन्द-अलंकार कोना रहत? पेटक असरि त' दिमाग धरि होइ छै। तमाम कल्पनाशीलताक भट्ठा बैसि

जायत। जीह जखन तरसैत रहत त' हृदय कोना धड़कैत रहत? औ बाबू ई नहि ख़ायब आ ने खाय देब' बला शासन त' विकासक गाड़ी के पटरी सँ उतारि देत। सभक विकास ठप्प भ' जायत। तखन सपनाक भारत कोना बनत। बुलेट ट्रेन पर के बैसत? बिना खेने-पीने लोक ने चेला बनि सकत आ ने गुरु। तैं जिनका अपने नहि खेबाक अछि त' नहि खाउ मुदा अनकर खायब-पीयब पर एना अट्ठाबज्जर नहि खसबियौ। भोज-भात चल' दिऔ। छनन-मनन चलैत रहय। अपने उपासल रहबाक अछि त' रहू, अनकर पेट पर त' लात नहि मारियौ। हे, भ' सकय त' कहियो के अपनो भोज-भातक इंतजाम करु। यदि लोक के खुअबैत-पीयबैत नहि रहबै त' लोक अहाँके गाओत कोना? लोक त' जतबा काल खाइत रहैए ततबे काल गबैत रहैए। आखिर गाना-बजाना त' अहूँ के चाहबे करी।

23 जुलाई 2015

*

अलंकार शिक्षा

औ बाबू राजनीति आब राजनीतिशास्त्रक विषय नहि रहल। ओ त' आब काव्यशास्त्रक विषय भ' गेल अछि। राजनीतिज्ञलोकनिक भाषामे जेना लक्षणा-व्यंजना आ छन्द, रस, अलंकारक प्रयोग भ' रहल अछि से काव्यशास्त्रेक निकष पर बूझल जा सकैत अछि। एहना मे जिनका छन्द ओ अलंकारक ज्ञान प्राप्त करबाक हो से साहित्यक आंगन के छोड़ि राजनीतिक खरिहानमे आबि के जमि जाथु। आब चुनावक अगहन सेहो नजदीके अछि। मेंह गाड़ल जा चुकल अछि। दाउन शुरू हेबा मे आब कोनो ततेक विलम्ब नहि। किछु अगता धान त' उक्खड़ि पर झांटलो जा रहल अछि। नहि त' पैर सँ मीड़लो जाय लागल अछि। हे सुनि लिअ'। एहि बेरुका चुनावी महाकाव्य मे विकासक आख्यान नहि भेटत। एक्के कथानक के कत्ते बेर अलटल-पलटल जा सकैत अछि। वस्तुतः विकासक आख्यान मे आब ओ रसो कहां रहल। ओकर छन्दो टूटि रहल छै। राजनीति संगे विकास त' आब मिलितो नहि छै, खाली भारी लगैत छै। एहना मे कवित्वशक्तिक सम्पूर्ण जोर खाली भाषा के अलंकारिक बनेबा पर अछि। शब्दालंकार, अर्थालंकार, उपमा, उपमेय, उपमान, उत्प्रेक्षा जे तकबाक हो, बुझबाक हो से सभटा एहि काव्य मे भेटि जायत। तैं अलंकार शिक्षा लेल एहि सँ नीक अवसर अहाँके भेटि नहि सकैत अछि। एखन त' अगस्ते मास छी। एहि काव्यक रचना त' नवम्बर धरि चलत। तत्काल काज ई करबाक छै जे कम सँ कम चारि जिस्ता बला मोटका रजिस्टर कीनि क' राखि लिअ' । सभ अलंकारिक कवित्वमय भाषा सभ के टीपने जाउ। ओहि मे कोन अलंकारक प्रयोग भेल अछि से प्रत्येक मासक अंत मे फरिछा लेब। लिखू पन्ना पर – थाड़ी परसि क' आगूक थाड़ी खीचि लेब। कालिया नाग के नाथब। भुजंग प्रसाद। चंदन कुमार। बड़का झुट्ठा। भारत जलाओ पार्टी। बीमारू प्रदेश। डीएनएक गड़बड़। जे जहर पिअत से बाद मे जहर उगलत। क्राइंग बेबी। रोरिंग बिहारी। एहि सभ बात के कहबाक छटा, भंगिमा आ ध्वनिक संग स्मरण करु। जखन फरिछाब'

लागब त' लक्षणा-व्यंजनाक संग विभिन्न अलंकार सभ ओहिना झकझक देखार पड़त। फट् सँ सभटा टीप लेब। आइ सँ पचास-साठि वर्ष पूर्व ई अलंकार शिक्षा कोनो साझी आश्रमक आंगनमे निरक्षर स्त्रीगण लोकनि सँ भेटैत छल। समय एतेक प्रगति अवश्य केलक अछि जे आब बड़का-बड़का पद पर बैसल साक्षर राजनेता सभ सँ भेटि रहल अछि। चलू कोनो बात नहि। उकटा-पैंची रहत त' रस-अलंकार शिक्षा बनल रहत।

13 अगस्त 2015

*

निचू चाड़ तर सोहाय मलार

औ बाबू ई लाखक-लाख करोड़क-करोड़ के गप सुनि के त' माथ घुमैए। एकोरत्ती नहि सोहाइए एहन गप। हमरा सभ त' हजार-बजार लेल तरसि रहल छी आ अहाँ सभ सुन्ना पर सुन्ना बढ़ौने जा रहल छी। कहू त' भला, एहि जनमारा बरसात मे घर के चुबै सँ बचाउ कि अहाँ सभक लाख-करोड़क बोल पर खु मनाउ? जखने कारी-कारी मेघ लगैए तखने कोंढ़ काँप' लगैए। कहिया एहन दिन हैत जे बरखा-पानि सँ बाँचब? एम्हर हम सभ बाढ़ि मे दहा रहल छी आ ओम्हर अहाँ दूनू बेकती बतकुट्टनि मे लागल छी। ने एहन दोस्ती देखलए आ ने एहन दुश्मनी।

सुनै छी अहाँ सभ सीटी के स्मार्ट बना रहल छी। ई बनल ठनल, चतुर-फुरतीला शहर सँ हमरा सभ के की फयदा? जे फयदा भेटतै से बेपारी सभ के। हमरा सभ के कियो बहरघरो मे रह' देत? ओहिठाम रहियो क' की करब? जी हुजूरी आ गुलामी छोड़ि क' आर भेटत की? अप्पन जगहो छोड़ब त' कथी लेल, दिन-राति खुशामद लेल? ऐ-तै सुन' लेल? दू मुट्ठी अन्न त' अहूठाम अरजिये लै छी। खाली ई चाड़ जँ खड़ सँ छारल भ' जइतए? चुआठ लग बर्त्तन-बासन जँ नहि राख' पड़ितए त' हमह सभ अहाँ सभक हाइ-फाइ, वाइ-फाइ गप सुनितहुँ। सुनितहुँ सवा सय करोड़ आ पौने तीन सय करोड़क उतरा-चौरी।

सभ बरख बाढ़ि आबि क' हाल-बेहाल क' जाइए। कहिया सँ सुनै छी अहाँ सभ नेपाल सरकार सँ गप क' रहल छी। की गप होइए से नहि जानि! जमीन पर त' किछु उतरिते नहि अछि। लगैए बंगटू ककाक सरंगोलिया गप सन किछु भ' रहल अछि। एम्हर अकाल आ बिकाल हमरा सभ के बेनगन केने जा रहल अछि। जेहो छल से बिलटि रहल अछि। ने जूट रहल ने ऊखि। ने मड़ुआ रहल ने भदइ। ने आम रहल ने कटहर। ने नदी रहल ने पोखरि। रसायनिक खादक टोपे माछो सभ मुँह बाबि रहल अछि। मुँह त' बाबू हमहूँ सभ बाबिए रहल छी। राशि-राशि के नबका

रोग-व्याधिक मारल छन मे छनाक भ' रहल अछि। नबका खानगी अस्पताल सभ जमीन-जाल, गहना-गुड़िया बन्हक रखबा रहल अछि।

एहना मे लाख-करोड़क गप सँ एना नहि लोभाब' हे बाबू। करबेक छह त' पानिक कोने इंतजाम कर'। सुनै छी बड़का मनीजर सभ छह। पानिक प्रबंधन किए नहि करै छह? बाढ़ि-दहाड़ सँ बाँची। अकाल-बिकाल सँ बाँची। एहन घर हो जाहि मे चुआठ नहि हो। निचू घर रहत तखन ने सोहायत मलार।

03 नवम्बर 2015

*

सर्भिसबला नोकरी

औ बाबू जखन आब सेवा बला राजनीति नहि रहल त' सेवा बला नोकरी कोना रहत? जखन सेवा-भावना परिदृश्ये सँ अलोपित अछि त' सर्भिसबला नोकरी की? आब त' नोकरी खाली निठ्ठाह नोकरी-चाकरी। एखन त' कारपोरेट राजनीति आ कारपोरेट जमाना अछि। कारपोरेट माने मालिक आ नोकरक कंपनी। बड़का मालिक-छोटका मालिक। बड़का नोकर-छोटका नोकर। नोकर सन मालिक। मालिक सन नोकर। सभ निष्ठा आ विश्वास एक व्यक्तिक प्रति। से राजनीति हो कि सरकारी सेवा। एहि मे जनताक सेवक कत' अबैत अछि? आब त' पब्लिक सर्भेंट खाली कानूनक किताबमे काहि काटि रहल अछि। किताबे धरि सीमित भ' गेल अछि। व्यवहार मे जनताक सेवा कत' पाबी। सरकारी नोकर सभकेँ फुर्सति छनि जे जनता दिस तकता? एहना मे मुख्यमंत्री जी कतबो सेवा-सेवाक फकड़ा पढ़थु, सेवा भावना सँ काज करबा लेल कहथु, कत्ते असरि करत से सभ जनिते छी। सर्भिसवला नोकरीक त' सभ सँ पैघ गुण छै सुरक्षा, से सुरक्षा जनताक सेवा सँ थोड़े उपजै छै। जनताक सेवक बनला सँ की भेट' बला छै? भेटै त' छै हाकिम के सेवक भेला सँ। सेहो मालिक सन के हाकिमक नोकर भेला सँ।

एक समय रहै जखन सर्भिसवला नोकरी के लोक नीक बुझय। बुझय जे एहि मे सुरक्षो छै आ सेवा करबाक अवसरो। तखन एक समय एहनो आयल जखन सर्भिसवला नोकरी के लोक गारि-सराप दिअ' लागल। ओकर दुर्गंजन शुरू भेल। जत' देखू प्राइवेट के बोलबाला। तकर बाद कारपोरेट के लहरि। सभ दिस ओकरे चर्चा। एत्ते पैघ के पैकेट आ एत्ते लाख के पैकेज। कारपोरेट उगैत सुर्ज लग सरकारी विभाग डुबैत सुर्ज। उगैत सुर्जक पूजा-अर्चना लेल लोकक धर्रोहि लाग' लागल। जखन मन्दीक असरि भेल त' इहो सुर्ज थस्स ल' लेलक। लोक फेर सरकारी नोकरी दिस तकलक, मुदा ताबे ओकर बगय-बानिए बदलि गेल छल। आब अहूठाम पे-स्केल नहि, पेंशन, नहि, एकमुश्त दरमाहा।

कॉन्ट्रैक्टवाला नोकरी। तैयो लोक के हायर-फायरक बदला आशाक डोर पर निरसल सरकारी ठप्पा पसिन्न पड़' लगलैक। मुदा आब ई ठप्पा ओ ठप्पा कहाँ रहि गेल अछि। तेँ सर्भिसबला नोकरिया मे ओ सुरक्षा कत' पाबी आब? हँ, बाइलीक जोगार ओहिना बनल अछि। बेसिए बढ़ल अछि। विकास एकरा सहस्त्रमुख केलक अछि। एहना मे एहि सहस्त्रमुखी चौक पर कत' भावना आ ताहू मे सेवाक भावना।

10 फरवरी 2016

*

धूर्त्त समागम

औ बाबू पछिला दिन लिटरेचर फेस्टीवल मे की अद्भुत नाटक देखलहुँ। चकविदोर लागि गेल। चकविदोर एहि दुआरे जे एक्कैसम शताब्दीक गप चौदहमे शताब्दी मे देखाओल गेल छल। जेहन लोक सभ के आइ देखैत छी से सभटा ओहू समय मे मौजूद छल। जेहने आइ सन्यासी बबाजी तेहने तहियो। जेहने आइ न्यायाधीश तेहने तहियो। जेहने कंजूस आइ तेहने तहियो। जेहने वेश्या आइ तेहने तहियो। की कहू अद्भुत धूर्त्त सभक जुटान छल। एक सँ एक धूर्त्त। सभ एक दोहरा के ठकबा लेल बिर्त्त। कियो ककरो बक्शैवला नहि। भेष संन्यासी के आ काज राम कहू। कोनो टा करम बाकी नहि। आसाराम बापूक प्रपितामहक प्रपितामह के बुझू त' साक्षात देखि रहल छलहुँ। भेष शहर कोतवाल के आ वृत्ति एहन जे कोनो दुर्वृत्ति छूटल नहि। शासनक डर देखा के लोकक चमड़ी धरि खींचि लिअय। आइ त' ओहेन कोतवाल डेगे-डेगे, शहरे-शहरे, गामे-गामे भेटत। जत' देखू खाकी भेष मे लुटबाक लेल करेकमान। एक सँ एक कंजूस भेटत आइ। रुपैया के बैंक मे राखि के सड़ा देत मुदा ने ओहि सँ अपने सुख करत आ ने समाजेक कल्याण मे लगाओत। कहै छै जे, कमाइ एक वस्तु छियै मुदा खर्च करब दोसर वस्तु छियै। लोकक पहिचान कमाइ सँ नहि होइ छै, ओ धन के खर्च कोना आ कथी मे करैये, ताहि सँ होइ छै। रच्छ रहल जे होश बाँचल छल जे ई नाटक छी, नहि त' अपने दाँत सँ अपन आंगुर काटि लितहुँ। कंजूस के देखैत आंगुर त' बाँचि गेल मुदा नाटक मे न्यायाधीश के देखि क' माथ त' घुमिये गेल। न्यायाधीश के कुर्सी पर बैसि क' न्याय केनिहार लोक जकर लाठी तकर भैंस के अनुसार न्याय मे लिप्त छला। न्यायाधीशो एहन धूर्त्त भ' सकैये से नहि सोचने छलहुँ औ बाबू । देखलहुँ त' ठीके माथ घूमि गेल । एहि दुआरे नहि जे छओ सय वर्ष पूर्वक धूर्त्त न्यायाधीश के देखलहुँ। माथ घूमल एहि कारणे जे आइ ओहि न्यायाधीशक सखा-सन्तान कत्ते पसिर गेल अछि। शक्ति आ टाकाक आगू कोना न्यायक बदला अन्याय भ' रहल अछि।

आ वेश्या? आब की कहू? एहन सुन्दर, एहन आकर्षक मुदा एहन माया जे ओहि सँ बढ़ि कियो ठगनी नहि। माया महा ठगनि हम जानी। से सभटा बूझियो क' बच्चा जय सीताराम। माया मे लिपटि गया रे। एहि माया रूपी ठगनी सभक उपयोग आइ नेशनल, मल्टीनेशनल कम्पनी सभ केहेन आ कोना क' रहल अछि, से त' देखिये रहल छी। ई कम्पनी सभ त' एकैसम शताब्दीक धूर्त सभ छी। आइ एहि कम्पनी सभक समागम देखि क' पहिलुका धूर्त सभ त' पतनुकान ल' लेत।

त' नाना भेष मे धूर्त सभक समागम देखौलनि ज्योतिरीश्वर ठाकुर। विद्यापति सँ पूर्व जन्मल ज्योतिरीश्वर ठाकुर आइ छह-सात सय वर्ष पूर्व जेना समय के चीड़ि क' सभ किछु देखि रहल छला। एहन नाटक रचलनि जे आइयो प्रासंगिक बनल अछि। अपना समयक समाज के जे जत्ते गहींर सँ देखि क' लिखत तकर रचना समय के अतिक्रमण करैत वर्षो-वर्ष प्रासंगिक बनल रहतै। औ बाबू, धूर्त्त समागम देखि क' त' लागल जे आइयो धूर्त्त सभ ओहिना समाज मे पसरल छथि। सभ एक दोसरा के ठकि रहल छथि। समागम चलि रहल अछि। मुदा एकैसम शताब्दीक प्रतापें टेक्नोलोजीक जेहेन उपयोग धूर्त्त सभ क' रहल छथि से सामान्य लोक की क' सकत ? अजुका धूर्त्त सभ त' ठीके दुनिया मुट्ठी मे क' लेलनि अछि।

16 मार्च 2016

*

मूस महिमा

औ बाबू ई समयोक गति अपूर्व अछि। कत्ते चिड़ै-चुनमुनी बिला रहल अछि। देश-विदेश सँ विभिन्न ऋतु मे अबैत पक्षी सभ अपन जग्गह छोड़ि रहल अछि। ओकर सभक जीबाक संसाधन आ जलबायु अनुकूल नहि रहलै। घरेलू आ जंगली जानबर सभ निपत्ता भ' गेल अछि। बगड़ा सभ के एहि कंक्रीटक जंगल मे खोंता बनेबाक जगह नहि भेटि रहलै अछि। तैं घर मे आब बगड़ा नहि भेटत। भेटत त' कम्प्यूटर मे अथवा पोथी-पतराक कभर पर ओकर फोटो। मुदा आइ-काल्हि जकर सभ सँ बेसी बढ़न्ती भेल अछि से छी-मूस। जत्त' देखू तत्त' मूस हाजिर भेटत। घर-आंगन, दोकान आ बजार सभतरि ओकर चला-चलती बढ़ल अछि। छोट-छीन मुसरी सँ ल' क' भोकनमा मोट-डाँट मूस जत' ताकब भेटि जायत। मूसक प्रजाति जतेक बढ़ल अछि ततेक ककरो नहि। ओकर जनसंख्या. बृद्धिक ई हाल अछि जे. आब मूस सभ के ककरो सँ डर नहि होइत छैक। लगैए मूसक सामूहिक संगठन जोरगर भेल जा रहल अछि।

अहाँ जँ आँखि गुड़ारि क' ओकरा दिस तकबै त' ओहो नांगरि पर ठाढ़ भ' अहाँक आँखि सँ अपन आँखि मिलाब' लागत। नांगरि पर ठाढ़ एहन गौरव मूसे टा के भ' सकैत छै। ओकर नांगरि होइतो छै अलबत्त। एहि नांगरिक बल पर ओ सभ के चुनौती देने फिरैत छै। अहाँक पलक झपकि जायत। आँखि नीचा भ' जायत। मुदा मूस अपन आँखि गुड़ारने अहाँ दिस तकिते रहि जायत। ओकरा ने अहाँ सँ कनियो धाख होइ छै ने डर। एहन निडर मूस पहिने नहि छल। आब त' बिलाइयोक कोनो डर नहि रहि गेल छै मूस सभ के। बिलाइक आगू मस्ती करैत रहैए आ बिलाइ टुकुर-टुकुर तकैत रहैए।

कने सौचियौ औ बाबू, एहन निडर कोना भ' गेल मूस? खाली बिलाइए पर सोचबाक भार द' कोना निश्चिन्त भ' सकैत छी? ओकर त' खाली आहार छिनायल छै अहाँक त' जीवन छिना रहल अछि। सौचियौ जे एहन

उछल-कूद आ उपद्रव करबाक हिस्सक के, कोना दिन-दिन बढ़ौने जा रहल अछि मूस? की अहाँके नहि लगैए जे ओकर निडरताक जड़ि मे छै अपन आ समस्त परिवारक लेल खेबा-पीबाक पुख्ता व्यवस्था? ओहि व्यवस्था के पहिने तहस-नहस केनिहार लोक रहय आब त' कियो नहि अछि। सभ अपने व्यवस्था मे लागल अछि। एहना मे उपद्रवी के सैंतत के? तैं मूस जोराबर सिंह बनि गेल अछि। अहाँक सैंति के राखल पोथी-पतरा के काटि-कुटि क' छोड़ि देत। तहस-नहस क' देत। पुरान आ ऐतिहासिक वस्तु सभ ओकरा चहटगर लगैत छै। पुरान आ ऐतिहासिक वस्तु सभ मोलायम होइ छै। ओकरा नष्ट-भ्रष्ट करबा मे मूस सभ के दाँत पर कनियो जरब नहि पड़ै छै। मुदा एम्हर मोलायम वस्तु पर दांत चलबैत ओ कने कठोरो वस्तु सभ के काट' लागल अछि। एहि मामिला मे मूसक विकास देखबा जोग अछि। असल मे ई मूसक दांतक सबसबैनीक बढैत चल जायब छी। ई सबसबैनी एम्हर तेजी सँ बढ़ि रहल अछि। पुरान लिक्खा सभक बाद ओ कोन-कोन वस्तु सभ के नष्ट-भ्रष्ट करबा पर लागि गेल अछि तकर जँ सूची बनायब त' ई बात बूझि जेबै जे मूस सन उपद्रवी जीव के मनुक्खक ओहि समस्त चीज-वस्तु सँ दुश्मनी छै जे खुशफैल सँ जीबाक लेल जरूरी अछि।

एही संग मूसक उपद्रवी स्वभावक बढ़ैत चल जायब आ मनुक्ख के सहैत चल जेबा मे पारस्परिक सम्बन्ध छै से अध्ययनक रोचक विषय अछि। यदि अहाँ लग अध्ययन-मनन लेल तत्काल कोनो विषय हाथ मे नहि अछि त' किएक नहि एहि कल्याणकारी काज सँ श्रीगणेश करैत छी?

06 अप्रैल 2016

*

पोखरि सभ के कहिया उड़ाहब

औ बाबू जाहि पोखरि मे नहाइत रही, नेनपन मे चुभकैत रही से पोखरि आइ मरणासन्न भेल हुकुर-हुकुर क' रहल अछि। चारुकात सँ ओहि मे गदौस फेकल जाइये। नाली बना क' ओहि मे गंदा पानि छोड़ल जाइये। अनावृष्टिक कारणे पोखरि मे ओहिना जलक अभाव ताहि पर सँ ओकर ई धौजनि। भरि गाम घुमि जाउ, एक्कोटा पोखरि नहि भेटत जे पोखरि सन लागत। कागज आ प्लास्टिकक अम्बार सँ भरल। पोखरिक मामला मे आब शहर आ गाम मे कोनो फरक नहि रहि गेल अछि।

देशक आजादी के समय सौंसे देश मे चौबीस लाख पोखरि रहय। से 2001 ई. मे आबि क' साढ़े पाँच लाख रहि गेल। उन्नैस लाख पोखरि निपत्ता भ' गेल। जे बचल अछि ओहि मे पन्द्रह प्रतिशत बेकार पड़ल अछि। निपत्ता होइत पोखरिक असरि लोक़क आजीविका पर त' पड़बे कयल अछि, आब त' ओकर असरि जान-माल पर पड़ि रहल अछि। एहन विकाल समय मे जखन गरमी आ देह के झड़कबै बला पछबा हवा बहि रहल अछि, सौंसे अगिलग्गीक घटना बढ़ि गेल अछि । हजारो-हजार घर स्वाहा भ' गेल अछि। एहना मे अगिलग्गी सँ बचेबा मे मरणासन्न पोखरि सभ कोनो काज नहि आबि रहल अछि। शहर मे त' फायरो ब्रिगेड अछि, गाम मे त' पोखरि आ इनारे सहारा छल। मुदा इनार सभ त' निपत्ता भेल, बचल-खुचल पोखरियो सभ टग हनि रहलए ।

कहल जाइत रहल अछि जे हमरा सभक इलाका नदी आ पोखरिक मामला मे धनीक रहय। मुदा आब त' गरीब आ विपन्न भेल जा रहल अछि। आब जानक गाहकि भेल अछि तैयो मति नहि फिरल अछि। पुरना पोखरि सभ के कहिया उड़ाहब? नब-नब पोखरि खुनेबाक ओरिआओन कखन करब? जत' गरीब सँ गरीब लोक, गामक दलित स्त्री सँ ल' क' जमीन्दार, महाराज धरि पोखरि खुनबैत रहय ओत' हम सभ पोखरि सभ के भत्थन बना देलहुँ। गाम-गाम मे पूजा-पाठ बढ़ि रहल अछि। जत' कहियो बासंती

दुर्गा-पूजा नहि होइत छल ओतहु लाख-लाख खर्च क' के धूमधाम सँ पूजा भ' रहल अछि। भरि-भरि राति भिडियो चलैत अछि। नाच-गान होइत अछि। मुदा कूपोत्सव-तरागोत्सव नहि होइत अछि। इनार आ पोखरि खुना क' उत्सव नहि मनाओल जाइत अछि। एहन उत्सव नहि होइत अछि जाहि सँ लोकक उपकार हुअय। जूड़शीतल सेहो बन्दे जकाँ अछि। मरणासन्न पोखरि मे पैसि क' जे थाल-कादो उपछबाक खेल खेलाइ त' अन्हेरे पोखरि उड़ाहल भ' जायत। ओहि मे पानि बेसी जमा भ' सकत। माछो पोसा सकत। पानि बिना की जीवन। पोखरि बिना की गाम-घर। आउ, कने जीवन बचाओल जाय। पोखरि खुनाओल जाय।

20 अप्रैल 2016

*

हाइवे पर हरियरी

औ बाबू हाइवे उच्च पथे टा नहि होइत अछि। राजमार्गो होइत अछि। एहि राजमार्ग पर गाछ-पात अहाँके बेसीठाम नहियें भेटत। बीच मे छोट-छोट गाछ भेटबो करत त' से करबीर आ कनैलक। राजमार्ग पर कत्तौ छाया नहि रहै छै। ओत' गरमी मे तपैत रौद अहाँके जरबै लेल सभतरि मौजूद भेटत। बुझू त' राजमार्ग पैदल चलनिहारक लेल होइते नहि छै। ई मानि क' चलल जाइत अछि जे ओहि पर कियो पैरे नहि चलत। जे चलत से द्रुतगामिनी वाहन सँ। तैं ओ पैरे चलनिहारक चिन्ता नहि करैत अछि। से सड़क सुरक्षाक मामला हो वा हाइवे पर हरियरीक। मनुक्ख पैरे चलय कि कोनो वाहन पर ओकरा सड़क पर छाया आ हरियरी त' चाहबे करी। सुरक्षाक चिन्ता त' रहबे करतैक। तैं हाइवे पर हरियरीक मादे सोचब-विचारब जरूरी। आ कि नहि?

ई खुशीक बात छी जे केन्द्र सरकार एहि लेल डेग उठेबाक ब्योंत केलक अछि। केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी कहलनि अछि जे जून सँ हरित हाइवे नीति लागू भ' जायत। एहि नीति के तहत हाइवेक ठेकाक कुल लागत के एक प्रतिशत 'ग्रीन फंड' क रूप मे लगाओल जायत। तहिना सड़क सुरक्षाक लेल सेहो एक प्रतिशत राशि बेराओल गेल अछि। सरकारक योजना गाम सँ सटल बारह सय राजमार्ग बनेबाक अछि। एहना मे ई जरूरी अछि जे गामक लोकक जीवन आ आवागमन के ध्यान मे राखल जाय। एहि राजमार्ग सभ सँ पराभव भोग' पड़ैत छै गामेक लोक के। तैं हजारक गाछ काटले नहि जाय, नव गाछ लगाओलो जाय। मनुक्खक लेल जेना रोटी-रोटी जरूरी छैक तहिना जल आ वायु सेहो। हाइवेक निर्माण मे जेना वृक्ष-संहार होइत अछि से जीवन लेल मारुक भ' रहल अछि। एहना मे सरकार हाइवे पर हरियरी लगेबाक लेल सोचि रहल अछि त' से नीक बात छी। मुदा से जमीन पर उतरय। ठीकेदार खाली अपन मोन हरियर करत त' हाइवे पर हरियरी कोना उतरत? तैं सरकारक संग हमरो सभ के योजनाक शत-प्रतिशत पालन लेल मोस्तैद रह' पड़त। औ बाबू, अपन गामक कात मे हाइवे पर हरियरी लेल जँ अहींके चाँकि नहि रहत त' आन के कोन गरज छै?

04 मई 2016

*



अशोक

जन्म	:	18 जनवरी, 1953
जन्म स्थान	:	लोहना, मधुबनी (बिहार)
शिक्षा	:	बी.एस-सी., डी.सी.एम. (मास्को)
वृत्ति	:	बिहार सहकारिता सेवाक सेवानिवृत्त पदाधिकारी
प्रकाशन	:	चक्रव्यूह (कविता-संग्रह) त्रिकोण (सहयोगी कथा-संग्रह) ओहि रातिक भोर (कथा-संग्रह) मातबर (कथा-संग्रह) मैथिल आँखि (निबन्ध-संग्रह) कथाक उपन्यास : उपन्यासक कथा (मैथिलीक आरम्भिक उपन्यासक अध्ययन) आँखिमे बसल (यात्रा कथा) बात-विचार (आलोचना) डैडीगाम (कथा-संग्रह)
सम्पादन	:	संवाद (वार्त्ता) प्रतिमान (विचार गोष्ठीक आलेख ओ विमर्शक संग्रह) सन्धान (अनियतकालीन पत्रिका)
वर्त्तमान पता	:	बी 102, श्री रामचन्द्र इन्क्लेव, रोड नं.-1ए, शिवपुरी, पटना-800023, मो.-8986269001 ashokthewriter@gmail.com

शेखर प्रकाशन, पटना-24 ISBN : 978-81-934584-6-4